CTETStudyMaterial.in

शिक्षा

मनोविज्ञान

Education group

Created By

Vijendra Rathore

EDUCATION PSYCHOLOGY

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

इकाई – I

शिक्षा मनोविज्ञान

Educational Psychology

- शताब्दियों पूर्व मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में माना जाता था।
- मनोविज्ञान को स्वतन्त्र विषय बनाने के लिए इसे परिभाषित करना प्रारम्भ किया गया।
- Psychology शब्द की उत्पत्ति (गेरेट के अनुसार) ग्रीक/लैटीन भाषा के दो शब्दों से Psyche+Logos से मिलकर हुई हैं।

  यहाँ Psyche का अर्थ :– आत्मा तथा

  Logos का अर्थ :– अध्ययन करना हैं।

- आत्मा शब्द को आधार मानकर 16वीं शताबदी में सर्वप्रथम **(प्लेटो, अरस्तु, डेकार्टे)** के द्वारा मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना।
- आत्मा शब्द की स्पष्ट व्याख्या नहीं होने के कारण 16वीं शताब्दी कें अन्त में यह परिभाषा अमान्य हो गई।

- 17वीं शताब्दी में **इटली के मनौविज्ञान पॉम्पानोजी व सहयोगी थासडरीड** ने मनोविज्ञान को **मन या मस्तिष्क** का विज्ञान माना।
- बाद में यह परिभाषा भी अमान्य व अपूर्ण अर्थ होने के कारण 18वीं शताब्दी में अमान्य हो गई।

  19वीं शताब्दी में विलियम वुण्ट, विलियम जेम्स, जेम्ससली टिचनर, वाइव्स आदि के द्वारा मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना।
- यह परिभाषा भी अपूर्ण अर्थ होने के कारण अमान्य कर दी गई।

- विलियम वुण्ट ने जर्मनी के लिपजिंग शहर में **(कार्ल मार्क्स वि. विद्यालय)** 1879 को प्रथम मनौविज्ञान प्रयोगशाला भारत में 1915 कलकत्ता में सेन गुप्त द्वारा स्थापित प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की। इसलिए **विलियम वुण्ट** को ''प्रयोगात्मक मनोविज्ञान'' का **जनक** माना जाता है।
- विलियम मेग्डूगल ने अपनी पुस्तक **Outline Psychology** में चेतना शब्द की निंदा की।
- 20वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को **''व्यवहार का विज्ञान''** माना गया है। और आज तक यही परिभाषा प्रचलित है। व्यवहार का विज्ञान मानने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक वाटसन और इनके अलावा वुडवर्थ, स्किनर, मेग्डूगल व थार्नडाइक आदि।

- **वाटसन का कथन** :– ''तुम मुझे एक बालक दो मैं उसे वो बना सकता हूँ जो मैं बनाना चाहता हूँ।''

- **वुडवर्थ के अनुसार** :– ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया। फिर मन व मस्तिष्क का त्याग किया फिर उसने अपनी चेतना का त्याग किया और आज वर्तमान में मनोविज्ञान व्यवहार के विधि स्वरूप को स्वीकार करता हैं।''
- **मेग्डुगल के अनुसार** :– ''मनोविज्ञान व्यवहार व आचरण का विज्ञान है।''

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

- **स्किनर** :– ''मनोविज्ञान व्यवहार व अनुभव का विज्ञान हैं।''

- **वाटसन के अनुसार** :– ''मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध, निश्चित, सकारात्मक, धनात्मक विज्ञान हैं।''

- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** :– ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन हैं।''

- **मन के अनुसार** :– ''आधुनिक मनोविज्ञान का संबंध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज हैं। ''

- **स्किनर** :– शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधार शिला हैं।

मनोविज्ञान की मुख्य शाखाएँ/क्षेत्र

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. तुलनात्मक मनोविज्ञान
4. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
5. समाज मनोविज्ञान
6. औद्योगिक मनोविज्ञान
7. बाल मनोविज्ञान/बाल विकास
8. किशोर मनोविज्ञान
9. प्रौढ मनोविज्ञान
10. विकासात्मक
11. निदानात्मक/उपचारात्मक/क्लिनिक मनोविज्ञान
12. परा मनोविज्ञान (आधुनिक शाखा)
13. पशु मनोविज्ञान
14. शिक्षा मनोविज्ञान

विजेन्द्र राठौड़

शिक्षा मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **रुडोल्फ गोयकल** को जाता हैं।

- विलियम जेम्स ने दर्शन शास्त्र से **मनोविज्ञान का मुक्त** कराया।

- और अमेरिका में मनोविज्ञान के जनक **विलियम जेम्स** ही हैं मनोविज्ञान की शाखा शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति **1900** ई. में मानी जाती हैं।

- बाद में थार्नडाइक, जड़, टरमन, प्रोबेल, हरबल आदि के प्रयासों से 1920 में शिक्षा मनोविज्ञान को स्पष्ट स्वरूप प्राप्त हुआ।

प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक **थार्नडाइक** को माना जाता हैं। शिक्षा में मनौविज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रूसो ने किया। उन्होने अपनी पुस्तक E-mail में लिखा है। **शिक्षा संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना।**

- **रुसो के अनुसार** :– ''बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए।''

- **क्रो एण्ड क्रो** :– ''शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक एक व्यक्ति के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।''

- **फ्रोबेल के अनुसार** :– ''शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी जन्मजात शाक्तियों का विकास करता हैं।''

- **स्किनर के अनुसार** :– '' मनोविज्ञान शिक्षा का आधार भूत विज्ञान हैं।''

- **ट्रो के अनुसार** :– ''शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक प्रस्तुतियों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन हैं।''

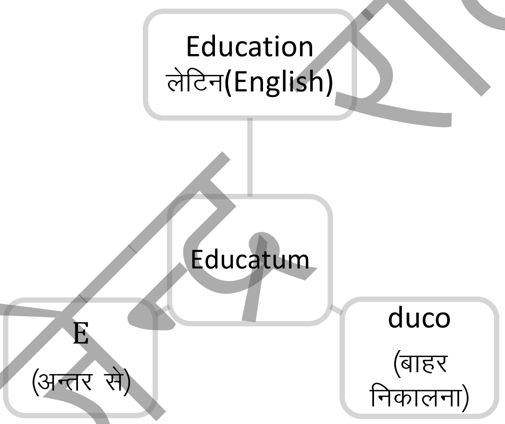

- आर्थत् शिक्षा का अर्थ होता है। बालक की अर्न्तनिहित योग्यताओं को बाहर निकालकर उसके व्यवहार में परिवर्तत करना है।
- Education शब्द की उपत्ति लेटिल भाषा के दो अन्य शब्दों से भी मानी जाती है।
  1. Educare
  2. Educere
- Educare यहाँ का अर्थ होता है। पालन पोषन करना Educere का आगे बढाना ।
- अर्थात मानव व्यवहार का अध्ययन कर उसमें परिवर्तन या परिमार्जन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।

- **शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति**
  1. शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।
  2. इसमें नियम व सिद्धांत का प्रयोग किया जाता है।
  3. किसी भी वैज्ञानिक पद्धति में हम उसका अध्ययन करते है। जिसका निरीक्षण किया जा सकता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करता है। जिसका कि निरीक्षण किया जा सकता है।

विजेन्द्र राठौड़

4. शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारात्मक पक्ष का शैक्षणिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है।
5. शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
6. शिक्षा मनोविज्ञान एक सकारात्मक (विद्यायक) विज्ञान है।
   जो शिक्षा के कब कैसे और कहा आदि प्रश्नों के उत्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है।
7. शिक्षा मनोविज्ञान अतीत की अपेक्षा वर्तमान की घटनाओं से क्या और क्यों से सम्बन्धित है।
8. इसके नियम व सिद्धांत सार्वभौमिक होते है।
9. इसके द्वारा भाविष्यवाणी की जा सकती है।

- **शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता**

1. स्वयं को पहचानने से सहायक
2. बालक को पहचानने में सहायक
3. शिक्षक के दृष्टिकोण को उन्नत व व्यापक बनाने में सहायक
4. किसी भी प्रकार की कक्षा में शैक्षणिक प्रस्तुतियाँ जागृत करने में सहायक ।
5. बालकों के प्रति प्रेम सहानभूति व समदृशी भाव अपनाने में सहायक ।
6. बालकों के चहुँमुखी विकास के लिए उचित शिक्षक विधियाँ अपनाने में सहायक ।
7. बालकों को अभिप्रेरित करते हुए उनमें रूचि जागृत करना ।
8. मूल्यांकन की नई नई विधियों का प्रयोग करना चाहिए

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

इकाई :– 2

अधिगम

- **सिखना किसी क्रिया /स्थिति के प्रति – सक्रिया प्रतिक्रिया/अनुक्रिया**

- **स्कीनर के अनुसार** :– ''सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामजंस्य की प्रक्रिया है।''
- **वुडवर्थ के अनुसार** :– ''नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखने की प्रक्रिया है।''
- **गेट्स एवं अन्य के अनुसार** :– ''सीखना अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।''
- **क्रों एण्ड क्रों के अनुसार** :– ''सीखना आदतों ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।''

अधिगम की विशेषताएँ :–

1. अधिगम जीवन पर्यन्त चलता है।
2. अधिगम उद्देश्य पूर्ण है।
3. अधिगम व्यवहार में परिवर्तन
4. अधिगम विकास है।
5. अधिगम अनुकूलन हैं।
6. अधिगम सार्वभौमिक हैं।
7. अधिगम विवेकपूर्ण हैं।
8. अधिगम निरन्तर है।
9. अधिगम खोज करना।
10. अधिगम सक्रिय प्रक्रिया है।
11. अधिगम व्यक्तिगत व सामाजिक होता है।
12. अधिगम एक नया कार्य है।
13. अधिगम अनुभवों का संगठन है।
14. अधिगम वातावरण की उपज है।
15. अधिगम विकास है।

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक व दशाएँ :–

1. वातावरण
2. परिपक्वता :–
3. बालको का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
4. विषय सामग्री का स्वरूप ।
5. सीखने का समय व थकान ।
6. प्रेरणा

विजेन्द्र राठौड़

7. सीखने की इच्छा
8. अध्यापक व सीखाने की प्रक्रिया ।
9. सीखने की विधि
10. सम्पूर्ण परिस्थिति

➢ अधिगम के सिद्धांत /नियम :–

➢ **रायर्बन के अनुसार** :– ''यदि शिक्षण विधियों मे इन नियमों व सिद्धांत का अनुसरण किया जाता है। तो सीखने का कार्य अधिक संतोष होता है।''

➢ **थार्नडाइक के सीखने के नियम** :– इन्होने कुल सीखने के 8 नियम दिए / जिसमें 3 प्रमुख व 5 गौण या सहायक नियम दिए ।

➢ **मुख्य नियम** :–

1. **तत्परता का नियम** :– किसी कार्य को करने के लिए व्यक्ति तत्पर रहता है तो आसानी से कर पाएगा या तत्काल कर देगा ।
   उदाहरण :– घोडे को पानी के तालाब तक ले जाया तो जा सकता है, लेकिन पानी पीने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता क्योकि घोड़ा पानी पीने के लिए तत्पर नहीं है।

2. **अभ्यास का नियम** :– करत–करत अभ्यास ते जडमति होत सुजान
   (i) उपयोग का नियम :– यदि कोई कार्य पहले किया हुआ है और जब उसकों दुबारा किया जाता है तो वह हमारे मस्तिष्क में पुनः आ जाता है, अर्थात स्थाई हो जाता है।
   (ii) अनुपयोग का नियम :– यदि किसी किए हुए कार्य को पुनः नहीं करते है। तो हमारा मस्तिष्क उसे भूला देता है

3. **प्रभाव/सन्तोष/असंतोष का नियम** :– यदि किसी कार्य को करने पर हमें संतोष प्राप्त होता है। तो हम उस कार्य को दुबारा करेगे। और यदि कार्य को करने पर हमें असंतोष होता है। तो हम उस कार्य को दुबारा नहीं करेगे।

गौण या सहायक नियम :–

4. **बहुप्रतिक्रिया का नियम** :– कोई नया कार्य करने के लिए कई प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपनाया जाता हैं तथा उसमें से सही प्रतिक्रिया का पता लगाकर भविष्य में काम लेता हैं।
5. **मनोवृत्ति का नियम** :– किसी कार्य को जिस मनोवृत्ति से (मन या मेहनत) से करेगे। वैसी ही सफलता मिलेगी।
6. **आंशिक क्रिया का नियम** :– किसी कार्य को छोटे–छोटे भागों मे बाँटकर किया जाता हैं तो उस कार्य में सफलता अधिक मिलती हैं। उदाहरण :– सचिन तेंदुलकर

विजेन्द्र राठौड़

7. **आत्मीकरण का नियम** :– (सादृशीकरण) कोई नया कार्य करने पर किसी पुराने किये गये कार्य का ज्ञान नये ज्ञान में मिला देना।
8. सम्बन्धित परिवर्तन का नियम :– क्रिया का रूप तो वही रखा जाता हैं लेकिन परिस्थितियों में परिवर्तन कर दिया जाता हैं। जैसे :– पावलव का कुत्ता

➢ थाईडाइक के सीखने के सिद्धांत :–

सन – 1913 में

– U.S.A. में

Book – Education Psychology (शिक्षा मनोविज्ञान)

प्रयोग – बिल्ली पर (भूखी)

उद्दीपक – Stimulus (माँस का टुकडा/मछली का टुकडा)

सिद्धांत उपनाम :–

(1) प्रयास एवं त्रुटी का सिद्धांत

(2) प्रयत्न एवं भूल का सिद्धांत

(3) आवृत्ति (बार–बार) का सिद्धांत

(4) उद्दीपक (Stimulus) अनुक्रिया (Respones) का सिद्धांत

(5) S-R Bond का सिद्धांत

(6) सम्बन्धवाद का सिद्धांत

(7) अधिगम का बन्ध सिद्धांत

नोट :– एक विशेष स्थिति/उद्दीपक (Stimulus) होता हैं। जो उसे एक विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया/अनुक्रिया (Response) करने के लिए प्रेरित करती है।

➢ इस प्रकार एक विशिष्ट उद्दीपक का एक विशिष्ट प्रतिक्रिया से सम्बंध स्थापित हो जाता हैं जिसे उद्दीपक प्रक्रिया (S-R Bond) द्वारा व्यक्त किया जाता है

➢ बिल्ली के समान ही बालक का चलना, चम्मच से खाना खाना, जूते पहनना।

➢ व्यस्क लोग भी ड्राईविग, टाई की गांठ, कोई खेल इसी सिद्धांत के अनुसार सीखते हैं।

➢ थाईडाइक के सीखने के सिद्धांत का शैक्षिक महत्व :–

(1) बड़े व मन्दबुद्धि बालको के लिए उपयोगी।

(2) धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास

(3) सफलता के प्रति आशा

(4) कार्य की धारणा स्पष्ट

(5) शिक्षा के प्रति रूचि

(6) गणित विज्ञान समाजशास्त्र आदि विषयों के लिए उपयोगी

विजेन्द्र राठौड़

(7) अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता का विकास

- **पुनर्बलन का सिद्धांत/ हल का सिद्धांत :–**

C.L. हल
निवासी :– U.S.A.

नोट :– इन्होंने यह सिद्धांत थार्नडाइक व पावलव पद्धति पर दिया। सन 1915 में अपनी पुस्तक Principles Behavere (प्रिन्सिपल बिहेवियर) में यह सिंद्धात दिया।

- यह सिद्धांत आवश्यकता पर बल देता हैं।
  प्रयोग :– बिल्ली/चुहे (थार्नडाइड पद्धति पर आधारित)

- नोट :– हल के अनुसार सीखना आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया के द्वारा होता हैं।

- हल ने इस सिंद्धात की व्याख्या करते समय बताया की प्रत्येक प्राणी अपनी आवश्यकता को संतुष्ट करने का प्रयास करता हैं। सीखने का आधार किसी आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया में होता है अर्थात कोई भी प्राणी उसी कार्य को सीखता है जिसमें उसकी किसी आवश्यकता की पूर्ति होती हैं।

- **स्किनर** :– ने हल के इस सिंद्धात को अधिगम का सर्व श्रेष्ठ सिंद्धात बताया हैं। क्योंकि यह आवश्यकता व प्रेरणा पर बल देता हैं। इसीलिए शिक्षार्थी को प्रेरित करके ही सिखाया जाता हैं।

- **शैक्षिक महत्व :–**
  (1) बालकों को प्रेरित किया जाता हैं।
  (2) यह सिद्धांत पाठ्यक्रम बनाते समय विद्यार्थियों की आवश्यकताओ पर बल देता हैं।
  (3) यह सिद्धांत कक्षा में पढाये जाने वाले प्रकरणों के उद्देश्यों को स्पष्ट करने पर बल देता हैं।
  (4) पुरुस्कार व दण्ड की व्यवस्था और प्रेरणा
  (5) उद्देश्य व लक्ष्य स्पष्ट होते हैं।

उपनाम :– प्रबलन का सिद्धांत
अर्न्तनोद न्यूनता का सिद्धांत
सबलीकरण का सिद्धांत
यथार्थ अधिगम का सिद्धांत
सतत अधिगम का सिद्धांत
क्रमबद्ध अधिगम का सिद्धांत
चालक न्यूनता का सिद्धांत

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

बान्डुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत :–

➢ **प्रतिपादक** :– अलबर्ट बान्डुरा
➢ **निवासी** :– कनाडा
➢ **जन्म** :– 1925 (4 दिसम्बर 1925)
➢ **सिद्धांत दिया** :– 1977 में
➢ **बान्डुरा द्वारा किए गए प्रयोग** :– बॉबीडॉल, जीवित जोकर (फिल्म)
➢ **सामजिक अधिगम का अर्थ** :– दूसरों को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करनें के कारण व दुसरों के व्यवहार को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को धारण करने तथा अमान्य व्यवहारों को त्यागने का कारण ही सामाजिक अधिगम कहलाता हैं।
➢ **नोट**:– इस सिद्धांत में अनुकरण द्वारा सीखा जाता है।

➢ **बान्डुरा ने अपने सिद्धांत में 4 पद बताए।**

1. **अवधान** :– निरिक्षणकर्त्ता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मॉडल आकर्षक, लोकप्रिय, रोचक व सफल होना चाहिए।
2. **धारण** :– व्यक्ति व्यवहारों को अपने मस्तिष्क में प्रतिमानों के रूप में व शाब्दिक वर्णन के रूप में ग्रहण कर लेता हैं।
3. **पुनः प्रस्तुतिकरण** :– जिसको हम ध्यान से देखकर धारण करते है। और धारण करने के बाद में उसे पुनः प्रस्तुतिकरण करेंगे।
4. **पुनर्बलन** :– जहाँ सकारात्मक पुनर्बलन मिलने पर हम उस कार्य को दुबारा करेगे। और नकारात्मक पुनर्बलन मिलने पर हम उस व्यवहार को दुबारा नही करेगे।

➢ बान्डुरा द्वारा बताए गए सामाजिक अधिगम सिद्धांत में व्यक्ति अपने आपको निम्नलिखित क्रियाओं द्वारा संतुलित रखता हैं।

1. **स्व नियन्त्रण** :– इसके तीन भाग होते है।
   (1) स्व निरोक्षण :– अपने आप के व्यवहारों को देखकर निरीक्षण करना।
   (2) विवेकपूर्ण निर्णय :–
   (3) स्व अनुक्रिया :–
2. **स्व निर्देशन** :– अधिगमकर्त्ता स्व निर्देशन द्वारा अपने व्यवहार को निर्देशित करने की प्रभावी युक्ति का प्रयोग कर सकते है।
3. **स्व पुनर्बलन** :– नकारात्मक व सकारात्मक पुनर्बलन के द्वारा भी व्यक्ति अपने व्यवहारों को निर्देशित कर सकता हैं।

समाजिक अधिगम का शैक्षिक महत्व :–

1. शिक्षक छात्रों के सामने आदर्श व्यवहार वाले प्रतिमान (मॉडल) प्रस्तुत करे।
2. बुरे व्यवहार उपस्थित ना होने दे।
3. स्व नियन्त्रण की विधि अपनाए।

विजेन्द्र राठौड़

4. अध्यापक विश्वास दृढ़ करने वाले संदेश देकर व अन्य व्यक्तियों की सफलताओं को दिखाकर तथा स्वयं के अनुभवों द्वारा विद्यार्थियों में स्व प्रभावशीलता का विकास कर सकते हैं।

क्रिया–प्रसुत का अधिगम् सिद्धांत :–

निवासी :– U.S.A.
प्रतिपादक :– B.F. स्किनर
सन :– 1938
प्रयोग :– चुहे (1938) व कबूतर (1943) पर

- **नोट** :– यह सिद्धांत थार्नडाइक के प्रभाव के नियम पर आधारित हैं।
- स्किनर ने अपने आधार पर बताया कि प्राणी सीखते समय दो प्रकार के व्यवहार करता हैं।

  (A) एक प्रकार के व्यवहार में उद्दीपक की जानकारी होती है इसे अनुक्रियात्मक व्यवहार और ज्ञात उद्दीपक के प्रति होने वाली अनुक्रिया प्रकाशित अनुक्रिया कहलाती हैं।
  (B) दूसरे प्रकार के व्यवहार में उद्दीपक की जानकारी नही होती है इसे क्रियाप्रसूत व्यवहार और अज्ञात उद्दीपक के प्रति होने वाली अनुक्रिया निर्गमित या उत्सर्जित क्रिया कहते हैं।

- स्किनर का मत हैं यदि इस प्रकार अनुक्रियाओं को पुर्नबलित (बल प्रदान करना) कर दिया जाए तो वे बलवति हो जाती है। और व्यवहार में स्थाई परिवर्तन लाती है।

- **नोट** :– स्किनर का मत है कि अनुक्रिया के लिए सदैव उद्दीपक होना आवश्यक नही हैं। कभी–कभी उद्दीपक की अनुपस्थिति में अनुक्रिया होती हैं।

- इसलिए स्किनर के बारे में कहा गया हैं कि इन्होंने परम्परागत थ्योरी (S-R) को R-S में परिवर्तन कर दिया।

शैक्षिक महत्व :–

1. अवांछित व्यवहारों को नकारात्मक पुनबर्लन प्रदान करके रोका जा सकता हैं।
2. अध्यापक छात्रों के वांछित व्यवहार को प्रशंसा पुकस्कार प्रोत्साहन और अपनी सहमती से पुर्नबलित कर दे तो विद्यार्थी ऐसे व्यवहार को बार–बार करना चाहेगा।
3. विद्यार्थी को तत्काल पुनबर्लन देना चाहिए।
4. शिक्षार्थी का परिणाम शीघ्रातिशीघ्र घोषित करना चाहिए।
5. अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्युटर सहायक, शिक्षण मशीन आदि में पुनबर्लन देने के लिए इसी सिद्धांत का प्रयोग किया जाता हैं।

उपनाम :–

1. R.S. का सिद्धांत
2. सक्रिय अनुबंधन का सिद्धांत

विजेन्द्र राठौड़

3. व्यवहारिक सिद्धांत
4. नेमेन्तिकवाद का सिद्धांत
5. कार्यात्मक प्रतिबधता का सिद्धांत

➢ **एक रेखिय अभिक्रमित अनुदेशन :–**

प्रतिपादक – BF स्किनर

सन – 1952

➢ **शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन :–**

प्रतिपादक – नार्मन ए क्राउड

सन – 1960

➢ **मैथेमेटिक्स या अवरोधी अभिक्रमित अनुदेशन :–**

प्रतिपादक – थॉमस एफ गिलबर्ट

सन – 1962

➢ **नोट :–** भारत में पहली बार प्रयोग इलाहाबाद में 1969 में किया गया।

विजेन्द्र राठौड़

पावलव का अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत :–

प्रतिपादक	:– I.P. पावलव / शरीर शास्त्री
निवासी	:– रूस
सिद्धांत	:– 1904
नोबल पुरस्कार मिला	:– 1904
प्रयोग	:– कुत्ते पर

U.C.S. - Unconditional Sitimulus (स्वभाविक उद्दीपक भोजन)
C.S. - Conditional Sitimulus अवस्भाविक उद्दीपक (घन्टी की आवाज)
U.C.R.- Unconditional Response (स्वभाविक अनुक्रिया लार)
C.R. - Conditional Response (अस्वभाविक अनुकूलित अनुक्रिया / अनुबांधित)

I अनुकूलन से पूर्व

स्वभाविक उद्दीपक (भोजन)	स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
U. C. S.	U. C. R.
अनानुबधित उद्दीपक	अनानुबंधित अनुक्रिया

II अनुकूलन के दौरान

अस्वभाविक उद्दीपक (घन्टी)	+	स्वभाविक उद्दीपक (भोजन)	स्वभाविक अनुक्रिया (लार)
C. S.		U. C. S.	U. C. R.
		अनानुबधित उद्दीपक	अनानुबधित अनुक्रिया

III अनुकूलन के बाद

अस्वभाविक उद्दीपक (घन्टी)	स्वभाविक अनुक्रिया (लार)
C. S.	C. R.
अनुबधित उद्दीपक	अनुबंधित अनुक्रिया व अनुकूलित अनुक्रिया

- नोट :– अनुकुलित अनुक्रिया का अभिप्रायः– अस्वभाविक उद्दीपक के प्रति स्वभाविक अनुक्रिया होना।

उपनाम :–

1. शरीर शास्त्री का सिद्धांत
2. शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत
3. क्लासिकल सिद्धांत / क्लासिकल अनुबंधन
4. अनुबंधित अनुक्रिया का सिद्धांत

विजेन्द्र राठौड़

5. सम्बन्ध प्रतिक्रिया का सम्बन्ध
6. अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धांत
7. अस्वभाविक अनुक्रिया का सिद्धांत

शैक्षिक महत्व :–

1. भय निवारण मे सहायक
2. सामाजिकरण में सहायक
3. अनुशासन विकसित करने में सहायक
4. गणित शिक्षण में सहायक
5. अभिवृत्ति विकास में सहायक
6. स्वभाव व आदत निर्माण में सहायक

विजेन्द्र राठौड़

➢ कोहलर का अर्न्तदृष्टि या सूझ का सिद्धांत :–

प्रतिपादक :– मेक्स वर्दीमर

प्रयोगकर्त्ता :– कोहलर

प्रयोग किया :– चिम्पांजी / वनमानुस / सुल्तान

सहयोग कर्त्ता :– कोफ्का

प्रतिपादन :– 1912

प्रसिद्ध :– 1920

गैस्टाल्टवाद :– जर्मन भाषा का शब्द

अर्थ :– पूर्णाकारवाद (सम्पूर्ण से अंश की ओर)

- गैस्टालवादियों के अनुसार सीखना प्रयास व त्रुटी के द्वारा न होकर सूझ के द्वारा होता हैं।
- सूझ का अभिप्राय अचानक उत्पन्न होने वाले एक ऐसे विचार से है जो किसी समस्या का समाधान कर दे
- सूझ द्वारा सीखने के अन्तर्गत प्राणी परिस्थितियों का भली प्रकार से अवलोकन करता हैं। तत पश्चात अपनी प्रतिक्रिया देता हैं।
- सूझ द्वारा सीखने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है और इस प्रकार के अधिगम में मस्तिष्क का सर्वाधिक प्रयोग होता हैं।

➢ शैक्षिक महत्व :–

1. समस्या का पूर्ण रूप से प्रस्तुतिकरण
2. तत्पर होना।
3. विषय वस्तु का उचित सगंठन व क्षमता के अनुसार विषय वस्तु।
4. रचनात्मक कार्यो के लिए उपयोगी।
5. कठिन विषय के लिए उपयोगी
6. कला संगीत साहित्य के लिए उपयोगी – क्रो एण्ड क्रो
7. लक्ष्य प्राप्ति में सहायक – ड्रेवर
8. समस्या – समाधान आधारित शिक्षा
9. स्वयं खोज कर सीखना

विजेन्द्र राठौड़

➢ जीन पियाजे का संज्ञानवादी सिद्धांत :—

निवासी :— स्विट्जरलैण्ड
सहयोगी :— बारबेल इन्हेलडर

जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते हुए संज्ञानवादी विकास का प्रतिपादन किया। इसीलिए जीन पियाजे को '' **विकासात्मक मनोविज्ञान** '' का जनक कहा जाता हैं।

➢ **विकास प्रारम्भ होता है** :— गर्भावस्था से जबकि संज्ञान विकास ''**शैशवास्था**'' से प्रारम्भ होकर जीवन पर्यन्त चलता रहता हैं।

➢ जीन पियाजे ने मानव संज्ञान विकास को चार अवस्थाओं के आधार पर समझाया है।

1. **संवेदी पेशिय अवस्था** :— (0—2 वर्ष)
   - ➢ इसे इन्द्रिय जनित अवस्था भी कहते है। इस अवस्था में शिशु अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता हैं।
   - ➢ वह वस्तुओं को देखकर सुनकर, स्पर्श करके गन्ध के द्वारा तथा स्वाद के माध्यम् से ज्ञान ग्रहण करता हैं।
   - ➢ इस अवस्था में शिशु अपने हाथ—पेरों को चलाना व शब्दों को बोलना सिख जाता हैं।

2. **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था या (पूर्व वैचारिक अवस्था)** :— उम्र :— (2—7 वर्ष)
   - ➢ इस अवस्था में शिशु दूसरों के सम्पर्क से, खिलौनों से व अनुकरण के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता हैं।
   - ➢ वह अक्षर लिखना, गिनती गिनना, रंगो को पहचानना वस्तुओं को क्रम में रखना, हल्की भारी वस्तु का ज्ञान होना, माता—पिता की आज्ञा मानना, पूछने पर नाम बताना और घर के छोटे—छोटे कार्यो में भाग लेना आदि कार्य करता हैं।
   - ➢ इस अवस्था में बालक तार्किक चिन्तन करने योग्य नही होता इसीलिए इसे अतार्किक चिन्तन की अवस्था कहते हैं।

3. **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था** :— (7—12 वर्ष)
   वैचारिक अवस्था
   चिन्तन की तैयारी का काल
   - ➢ इस अवस्था में चिन्तन की शुरूआत हो जाती है। लेकिन उसका चिन्तन केवल मूर्त (प्रत्यक्ष) वस्तुओं तक ही सीमित रहता हैं। इसीलिए इसे मूर्त चिन्तन की अवस्था के नाम से जाना जाता हैं।
   - ➢ इस अवस्था में बालक दो वस्तुओं के बीच अन्तर करना, तुलना करना, समानता व असमानता बताना सही व गलत में भेद करना आदि सीख जाता हैं।
   - ➢ इस अवस्था में बालक दिन तारीख, महीना, वर्ष आदि बताने में योग्य हो जाता हैं।

4. **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था** :— (12—15 वर्ष)
   - ➢ इस अवस्था में किशोर मूर्त के साथ—साथ अमूर्त चिन्तन करने योग्य भी हो जाता हैं इसीलिए इसे तार्किक अवस्था भी कहते हैं।

विजेन्द्र राठौड़

- इस अवस्था में चिन्तन करना, कल्पना करना, निरीक्षण करना, समस्या–समाधान करना आदि मानसिक योग्यताओं का विकास हो जाता हैं।

जीन पियाजे का शिक्षा में योगदान :–

1. बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया।
2. शिक्षक के पद को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि शिक्षक को बालक की समस्या का निदान करना चाहिए और बालको को उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए।

स्किमा :– जीन पियाजे ने बुद्धि को जीव विज्ञान को स्कीमा की भांति बताया है

- मानसिक सरंचनाा को व्यवहारगत समानान्तर प्रक्रिया जीव विज्ञान में स्कीमा कहलाती हैं। अर्थात किसी उद्दीपक के प्रति विश्वसनिय अनुक्रिया को स्कीमा कहते हैं।

विजेन्द्र राठौड़

अधिगम् स्थानान्तरण

प्रतिपादक :– थार्नडाइक

अर्थ :– एक स्थिति मे सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति मे प्रयोग किया जाता हैं। उसे अधिगम स्थानान्तरण कहलाता हैं।

अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार :–

1. **सकारात्मक स्थानान्तरण** :– धनात्मक/अनुकूल जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दुसरी स्थिति में सहायक होता है।

   उदाहरण :– (1) साईकिल चलाने वाला स्कूटर आसानी से सीख जाता हैं।
   (2) संस्कृत भाषा का ज्ञान हिन्दी विषय में सहायक

2. **नकारात्मक/ऋणात्मक/प्रतिकुल स्थानान्तरण** :– एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति में बाधा उत्पन्न करता हो उसे नकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं।

   उदाहरण :– (1) अमेरिका के ड्राइवर को भारत में ड्राइविंग करने में बाधा उत्पन्न होती है।
   (2) कला विषय के छात्र को गणित विषय पढ़ने में बाधा आएगी।

3. **शून्य स्थानान्तरण** :– जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दूसरी स्थिति में न तो सहायक और न बाधा उत्पन्न करता हैं।

   उदाहरण :– कबीर के दोहे याद कर लेने पर भी रहीम के दोहे याद करने में उतना ही समय लगेगा।

अधिगम वक्र

अधिगम वक्र हम उसे कह सकते हैं जो सीखने के कम अधिक, शून्य आदि को प्रदर्शित करता हैं।

अधिगम वक्र चार प्रकार के होते हैं।

1. **सरल रेखिय वक्र** :–

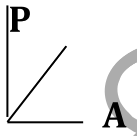

जब सीखने की गति एक समान होती हैं, उसे सरल रेखिय वक्र से प्रदर्शित करते हैं।

2. **उन्नतोदर वक्र** :– इसमें आरम्भ में सीखने की गति तीव्र फिर धीरे–धीरे मंद हो जाती हैं।

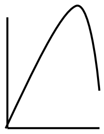

3. **नतोदर वक्र** :– इसमें आरम्भ से सीखने की गति मंद हो जाती बाद में धीरे–धीरे तीव्र होती हैं।

विजेन्द्र राठौड़

4. **मिश्रित वक्र** :– उन्नतोदर व नतोदर का मिला जुला रूप।

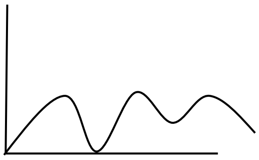

- **अधिगम का पठार** :– जब सीखने की गति रूक जाती हैं। न तो उन्नति होती हैं न अवनति होती हैं।
- **अधिगम के अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत** :–

कुर्ट लेबिन का– क्षेत्र सिद्धांत
टॉलमेन का – उद्देश्यवाद या संकेतवाद का सिद्धांत
गुथरी – प्रतिस्थापन का सिद्धांत
कार्ल रोजर्स – अनुभवजन्य अधिगम सिद्धांत
अब्राहम मेसलो– मानवतावादी अधिगम सिद्धांत
मिलर – सुचना प्रक्रियाकरण का सिद्धांत
जेरोम ब्रुनर – सरंचनात्मक सिद्धांत/अन्वेषण सिद्धांत

विजेन्द्र राठौड़

इकाई 3

बाल विकास

- **आधिगमकर्त्ता का विकास/शारीरिक विकास/सामाजिक विकास संवेगात्मक विकास और अन्य**

1. **अभिवृद्धि** :– अभिवृद्धि का अभिप्राय कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि/अभिवृद्धि के अन्तगर्त भार का बढना/ऊँचाई का बढ़ना, शारीरिक अगों के आकार में परिवर्तन आना, बालों का बढ़ना, नाखूनों का बढ़ना आदि शामिल है।

- **फ्रंक के अनुसार** :– ''कोशिकीय गुणात्मक वृद्धि ही अभिवृद्धि कहलाती है।''

2. **विकास** :– व्यक्ति में समग्र परिवर्तन ही विकास है। यहाँ परिवर्तन से तात्पर्य शारीरिक मानसिक व संवेगात्मक आदि से है। वास्तव में विकास भी अभिवृद्धियों का योग है। विकास के परिणाम स्वरूप प्राणी में नई–नई योग्यताएँ, विशेषताएँ, कार्यकुशलताएँ प्रदर्शित होती है।

जैसे :– हाथ पैर का बढ़ना, धड का बढना आदि अभिवृद्धि हैं लेकिन इसके कारण जो शारीरिक व मानसिक कार्यकुशलता उत्पन्न होती है उसे विकास कहा जाता है।

- **हरलॉक के अनुसार** :– ''विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है। इसकी अपेक्षा इसमें परिपक्व अवस्था के लक्ष्य और परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित होता है।''

अभिवृद्धि और विकास में अन्तर :–

अभिवृद्धि	विकास
1. अभिवृद्धि का संबंध शरीर के किसी अंग अथवा उपअंगों में परिवर्तन से है।	1. विकास समस्त अंगों के समस्यात्मक समग्र का बोधक हैं
2. अभिवृद्धि एक निश्चित समय के बाद रूक जाती है।	2. विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
3. अभिवद्धि का अर्थ सकुंचित है यह विकास की प्रक्रिया का अवयव (हिस्सा /भाग) मात्र है।	3. विकास का अर्थ व्यापक है । इसका सम्बन्ध न केवल शारीरिक पक्ष बल्कि संवेगात्मक सामाजिक , मानसिक आदि सभी पक्षों में है।
4. अभिवद्धि में व्यक्तिगत भेद पाये जाते है।	4. विकास में समानता होती हे। लेकिन इसकी दर / सीमा में अन्तर होता है।
5. अभिवृद्धि मात्रात्मक, प्रत्यक्ष व बाह्य होती है।	5. विकास अप्रत्यक्ष व आन्तरिक होता है। विकास गुणात्मक होता है।
6. अभिवृद्धि को नापा , तौला जा सकता हैं	6. विकास का अनुभव किया जा सकता है।

- **अभिवृद्धि एवं विकास के सिद्धांत** :–

1. निरन्तर विकास का सिद्धांत

2. विकास की विभिन्न गति का सिद्धांत

विजेन्द्र राठौड़

3. **विकास क्रम का सिद्धांत**

जैसे :–

भ्रूण का बनना

बालक का जन्म लेना

चलना – फिरना बोलना फिर पढना आदि।

4. **विकास की दिशा का सिद्धांत** :– सिर से पैर की ओर

उपनाम :–

मस्तकोध मुखी

शिरोपुँज विकास :– सिर से पैर की और

केन्द्रीय परीधिय विकास

निकट दूर का विकास

5. **एकोकरण का सिद्धांत :–**
6. **परस्पर सम्बन्ध का सिंद्धात :–**

शारीरिक विकास

मानसिक विकास

संवेगात्मक विकास

सामाजिक विकास

नैतिक विकास

7. **सामान्य एवं विशेष प्रतिक्रिया का सिद्धांत :–**
8. **समान प्रतिमान (मॉडल) का सिद्धांत**
9. **वंशानुक्रम एवं वातावरण की अंतःक्रिया का सिंद्धात :–**
10. **परिमार्जिता का सिद्धांत (लाभ के साथ)**

विकास की अवस्थाएँ :–

शैक्षणिक दृष्टिकोण से विकास की अवस्थाओं में निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

1. **शैशवावस्था**	:– जन्म से लेकर 5 से 6 वर्ष तक
2. **बाल्यावस्था**	:– 5 से 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
(1) पूर्व बाल्यावस्था	:– 6 से 9 वर्ष तक
(2) उत्तर बाल्यावस्था	:– 10 से 12 वर्ष तक
3. **किशोरावस्था**	:– 13 से 18 वर्ष तक
(1) पूर्व किशोरावस्था	:– 13 से 16 वर्ष तक
(2) उत्तर किशोरावस्था	:– 16 से 18 वर्ष तक
4. **प्रौढ अवस्था**	:– 18 से अधिक

विजेन्द्र राठौड़

(1.) शैशवावस्था :– शैशवावस्था वह अवस्था है जो जन्म के पश्चात प्रारम्भ होती है, तथा 5 या 6 वर्ष की आयु तक चलती है।

- शैशवावस्था को जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था माना गया है। क्योकि इस काल में शिशु का जितना ज्यादा निर्देशक व नियन्त्रण किया जाता हैं। भावी जीवन की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :– इन्होने 20 वीं शताब्दी को बालको की शताब्दी कहा क्योंकि इस शताब्दी में बालकों के विकास को लेकर विस्तृत एव गहन अनुसंधान प्रयोग किये गये है। और इसी के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि शैशवावस्था जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है।

शैशवावस्था के महत्वपूर्ण कथन :–

1. **वेलेंटाइन के अनुसार** :– शैशवावस्था सीखने का आदर्श काल है।
2. **थार्नडाइक के अनुसार** :– 3–6 वर्ष की आयु का बालक प्रायः अर्द्धस्वपनावस्था की अवस्था में रहते है।
3. **फ्रायड** :– व्यक्ति को जो कुछ भी बनना होता है वह चार पाँच वर्षो में बन जाता है।
4. **वाटसन** :– शैशवावस्था में सीखने की गति और विकास की सीमा अन्य अवस्था की तुलना में अधिक होती है।
5. **गैसल** :– प्रथम 6 वर्ष बालक बाद के 12 वर्ष का दुगुना सीख जाता है।
6. **गुडएनफ** :– व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता हैं उसका आधार 3 वर्ष की आयु तक हो जाता है।

शैशवावस्था की विशेषताएँ :–

1. शारीरिक विकास की तीव्रता
2. मानसिक विकास की तीव्रता
3. सीखने का आदर्श काल
4. सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता
5. कल्पना की सजीवता
6. दूसरों पर निर्भरता
7. आत्म प्रेम/ स्व मोह की भावना
8. नैतिक गुणों का अभाव
9. मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
10. काम शक्ति का प्रदर्शन
11. अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया
12. जिज्ञासा की प्रवृत्ति
13. दोहराने की प्रवृत्ति
14. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
15. संवेगों का प्रदर्शन

विजेन्द्र राठौड़

- बाल्यावस्था :– 5–6 से 12 वर्ष
- बाल्यावस्था वह अवस्था है। जो 5–6 से प्रारम्भ होकर 12 वर्ष तक चलती है।
- बाल्यवस्था में विकास की गति मंद हो जाती है। इसका मंद होना भी आवश्यक होता है । क्योकि मंद गति के कारण इसके विकास में मजबूती आती है।

नोट :– बाल्यावस्था को गेंग ऐज कहा जाता है। और इसी उम्र में नेता बनने की योग्यता इच्छा रहती है।

बाल्यावस्था से सम्बधित महत्वपूर्ण कथनः :–

- कॉल व ब्रुश :– बाल्यावस्था को जीवन का अनोखा काल बताते हुए लिखा है।
  ''वास्तव में माता पिता के लिए बाल विकास की इस अवस्था को समझ पाना बहुत कठिन है।''
- रॉस के अनुसार :– बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता या छद्म काल कहा है।
- स्ट्रेग के अनुसार :– शायद ही ऐसा कोई खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक ना खेला हो ।
- किलपेट्रिक के अनुसार :– बाल्यावस्था को प्रतिद्विन्दात्मक सामाजिकरण का काल कहा है।
- ब्लेयर जॉन्स सिम्पसन :– ''बाल्यावस्था वह अवस्था है जिसमें एक व्यक्ति के बुनियादी दृष्टिकोण मूल्य आदि बहुत सीमा तक निर्धारित हो जाता है।''

शैक्षिण दृष्टिकोण से सम्पूर्ण जीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण कोई अन्य अवस्था नहीं है।

- **बाल्यावस्था** :– 6–12 वर्ष

  विशेषताएँ :–

1. शारीरिक विकास में स्थिरता :– रॉस
2. मानसिक विकास में स्थिरता :– रॉस
3. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
4. वास्तविक जगत से सम्बधित :– रॉस
5. जिज्ञासा की प्रबलता
6. रचनात्मक कार्यों में आनन्द
7. समूह भावना का विकास :– रॉस
8. नैतिक गुणों का विकास :– स्ट्रेग
9. संग्रह करने की प्रवृति
10. निरूउद्देश्य भ्रमण की भावना
11. काम शक्ति की न्यूनता
12. रूचियों में परिवर्तन (काल/ब्रुश)
13. सामुहिक खेलों में रूचि
14. बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास
15. संवेगों का दमन एंव प्रदर्शन

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

- **किशोरावस्था :–** 13 से 18 वर्ष

  Adolescence – लैटिन भाषा के Adolescere से बना है।

  अर्थ :– एडोलिसियर – प्रजनन या परिपक्वता का विकसित होना

- **किशोरावस्था के उपनाम :–**

1. तूफानों की अवस्था :– हॉल
2. जीवन का सबसे कठिन काल :– किल पेट्रिक
3. जीवन का बसन्त काल :– टीन एच
4. सुन्दर अवस्था ।

- किशोरावस्था वह अवस्था हैं जिसमें प्रजनन क्षमता विकसित हो जाती है। परिपक्वता का विकास हो जाता है । किशोरावस्था एक चुनौती पूर्ण अवस्था है। किशोरावस्था की सबसे बडी विडम्बना यह है कि किशोर अपने आप को बडा समझते है। और व्यक्ति उसे छोटा समझते है।

किशोरावस्था के महत्पूर्ण कथन :–

1. **स्टेनली हॉल** :– ''किशोरावस्था बडे संघर्ष, तनाव, दबाव, विरोध, झंझावत और तूफानों की अवस्था है ।''
2. **हॉल** :– किशोरावस्था एक नया जन्म है। क्योकिं इसी में श्रेष्ठतर व उच्चतर मानवीय विशेषताओं के दर्शन होते है।
3. **रॉस** :– ''किशोरावस्था शैशवावस्था का पुर्नवर्तन कॉल है''
4. **किल पेट्रिक** :– ''इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है या कठिन सीढी है''
5. **क्रो/क्रो** :– ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति व भावी शक्ति है। आशा को प्रदर्शित करता है।''

- **विशेषताएँ :–**

1. शारीरिक व मानसिक विकास में तीव्रता (बिग एण्ड हण्ट)
2. घनिष्ठ व व्यक्तिगत मित्र बनते है।(वेलेनटाइन)
3. व्यवहार में विभिन्नता
4. स्थिरता एवं समायोजन का अभाव (रॉस)
5. वीर पूजा की भावना – किसी को अपना आदर्श मानना
6. ईश्वर व धर्म में विश्वास
7. अपराध प्रवृत्ति का विकास
8. काम शक्ति में परिपक्वता
9. स्वतन्त्रता व विद्रोह की भावना
10. व्यवसाय चयन की चिन्ता
11. रूचियों में परिवर्तन एवं स्थिरता
12. समाज सेवा की भावना

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

विकास के प्रकार :–

- **शारीरिक विकास** :– शारीरिक विकास का अभिप्राय शारीरिक अंगों के विकास में आकार में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली शारीरिक कार्य कुशलता है।

शैशव अवस्था में शारीरिक विकास :–

1. **भार** :– नवजात शिशु (बालक) का भार :– 7.15 पौण्ड या 3 किलो 245 ग्राम
   नवजात शिशु (बालिका) का भार :– 7.13 पौण्ड या 3 किलो 240 ग्राम
   प्रथम 4–6 माह में भार दुगुना व 1 वर्ष के अन्त में तीगुना हो जाता है।

- दूसरे वर्ष में भार आधा पौण्ड प्रतिमाह की दर से बढता है और शैशव अवस्था के अंत में 38–43 पौण्ड हो जाता है।

2. **लम्बाई** :– नवजात शिशु (बालक की ऊचाई) 20.5 इंच होती है।
   नवजात शिशु (बालिका की लम्बाई) 20. इंच होती है।
   प्रथम वर्ष में लम्बाई 10–12 इंच बढती है तथा बाद में गति धीमी हो जाती है।

3. **सिर का आकार व मस्तिष्क का भाग** :– नवजात शिशु के सिर का आकार उसकी कुल लम्बाई का 1/2 या 25% होता हैं।
   प्रथम दो वर्ष में सिर का आकार तेज गति से बढता है लेकिन इसके बाद धीमी गति से बढता हैं।
   नवजात शिशु के मस्तिष्क का भार 350 ग्राम होता है।
   प्रथम दो वर्ष में यह दुगुना हो जाता है।

   5 वर्ष की आयु में परिपक्व मस्तिष्क का 80% विकास हो जाता हैं।

4. **दाँत** :– जब शिशु छः महीने का होता है तो दूध के दाँत निकलने प्रारम्भ हो जाते हे। सर्वप्रथम नीचे वाले आगे के दो दाँत आते है । जिनकी संख्या 1 वर्ष के अन्त में 8 दाँत हो जाते है। और 4–5 की आयु में सभी (20) दूध के दाँत निकल जाते है।

5. **हड्डियाँ** :– जब नवजात शिशु का जन्म होता है तो हड्डियों की संख्या 270 होती हैं।
   ये हड्डियाँ कोमल व लचीली होती है, जो भली प्रकार से जुडी हुई नहीं रहती है। लेकिन केल्सियम, फास्फोरस जैसे तत्वों के कारण दिन प्रतिदिन हड्डियाँ मजबूत होती है। इसे अस्थि निर्माण कहते है।

- **अन्य अंग** :– नवजात शिशु की मांसपेशियों का भार कुल भार 23 % होता है।
  नवजात शिशु के हृदय की धड़कन 1 मिनट में 140 बार धड़कती हे।
- **टाँगें** :– डेढ़ गुनी भुजाएँ, दो गुनी हो जाती है।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

➢ बाल्यअवस्था में शारीरिक विकास :–

भार :– बालक या बालिका दोनों का भार बढ़ता है और भार 80 से 95 पौंड हो जाता है।
ऊंचाई :– ऊँचाई बहुत धीमी गति से बढ़ती हैं ऊँचाई में कुल वृद्धि 10–12 इंच होती है।

- **सिर का आकार व मस्तिष्क का भार** :– 9 वर्ष की आयु में सिर का आकार प्रौढ़ सिर का 90 % हो व 10 वर्ष की आयु में प्रौढ़ सिर का आकार 95% हो जाता है।
  मस्तिष्क का भार 9 वर्ष की आयु में लगभग 90% हो जाता है।

- **दाँत** :– 6 वर्ष की आयु से दूध के दाँत गिरने प्रारम्भ हो जाते है। व 11 व 12 वर्ष की आयु तक सभी दूध के दाँत गिर जाते हे। व उनके स्थान पर स्थाई दाँत आ जाते है।

- **हड्डिया** :– छोटी छोटी हड्डियों के बनने के कारण हड्डियाँ की संख्यों की संख्या 270 से बढकर 350 हो जाती है।

- **अन्य अंग** :– 9 वर्ष की आयु में मांसपेशियों का भार 27% और 12 वर्ष की आयु में मांसपेशियों का भार 33% हो जाता है।
  6 वर्ष की आयु में ह्रदय की धडकन 1 मिनट में 100 बार हो जाती है।
  12 वर्ष की आयु में 85 बार हो जाती हैं
  यौन अंगों का विकास हो जाता है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास :–

- **भार** :– किशोर व किशोरियों दोनों का भार बढता हैं और भार में अन्तर 25 पौण्ड का होता है।
- **ऊंचाई** :– 16 वर्ष की आयु तक किशोरियां अधिकतम ऊँचाई ग्रहण कर लेती है। जबकि किशोर 18 वर्ष के बाद भी बढते है।

- **सिर का आकार व मस्तिष्क का भार** :– सिर अपना प्रौढ आकार ग्रहण कर लेता है। और मस्तिष्क का भार 1200 से 1400 ग्राम हो जाता है।
- **दाँत** :– यहाँ दाँतों की संख्या 28 हो जाती है। और प्रज्ञा दंत (अक्ल दांत) आने होते है। जिनकी संख्या 4 होती है। किशोरावस्था के अन्त में या प्रौढ अवस्था के प्रारम्भ में आ जाते है।
- **हड्डिया** :– छोटी छोटी हड्डियों के जुडने के कारण हड्डियों की संख्या 206 रह जाती हें
- **अन्य अंग** :– हदय की धडकन 1 मिनट में 72 बार होती है और यौन अंगों का पूर्ण विकास हो जाता है।
  मांसपेशियों का भार कुल भार का 44% हो जाता हैं ।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

मानसिक विकास :–

- **मानसिक विकास** :– मानसिक विकास का अभिप्राय मानव ज्ञान भण्डार में वृद्धि होना और उसे नवीन परिस्थितियों में काम लाने की योग्यता के विकसित होने से हे। इसके अन्तर्गत विभिन्न मानसिक शक्तियों, चिन्तन, मनन, तर्क, समस्या, समाधान, निर्णय लेना आदि का विकास शामिल है।
- शैशव अवस्था में मानसिक विकास
- **सारेन टेलफोर्ड के अनुसार** :– शिशु जैसे–जैसे प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह, प्रतिमाह, प्रतिवर्ष बढ़ता जाता हैं। उसकी शक्तियों में परिवर्तन आ जाता है।
- **जन्म के समय व प्रथम सप्ताह** :–
  जॉन लॉक के अनुसार :– जब शिशु का जन्म होता है तो उसका मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह धीरे–धीरे अनुभव दिखता हैं।

- **द्वितोय सप्ताह** :– शिशु प्रकाश व चमकीली वस्तुओं की तरफ आकर्षित होता है।
- **प्रथम माह** :– शिशु को कष्ट व भूख का अनुभव होने पर भिन्न–भिन्न प्रकार से रोता है।
- **द्वितोय माह** :– शिशु आवाज सुनने के लिए सिर घुमाता है। और सभी शोर ओर ध्वनियाँ उत्पन्न करता है ।
- **तीसरा महिना** :– अपनी माँ को पहचानने लगता है।
- **चौथा महिना** :– शिशु सभी पीड़ाओं व्यंजनों की ध्वनियाँ उत्पन्न करने लगता है।
- **पाँचवा व छठा महिना** :– शिशु अपना नाम समझने लगता हैं व प्रेम व क्रोध में अन्तर करने लगता है।
- **सातवा व आठवा महिना** :– शिशु अपनी पंसद का खिलौना छाँट लेता है।
- **नवा व दशवा महिना** :– खिलौना छिनने पर रोकर विरोध प्रकट करता है।

- ✓ **एक वर्ष**:– शिशु चार शब्द बोलने लगता है **''पा, मा, दा, का''**
- ✓ **दो वर्ष** :– दो शब्दों को बोलने लगता है । 2 वर्ष के अन्त में उसका शब्द भण्डार 100 से 200 शब्दों का हो जाता है।
- ✓ **तीन वर्ष** :– शिशु पूछने पर अपना नाम बता देता है। **सीधो** व **लम्बी** रेखा को देखकर वैसी बनाने की कोशिश करेगा।
- ✓ **चौथा वर्ष** :– शिशु चार तक की गिनती गिन लेता है। छोटी व बडी रेखा में अन्तर बता देता है। अक्षर लिखना प्रारम्भ कर देता है।
- ✓ **पॉचवा वर्ष** :– शिशु भारी व हल्की वस्तुओं में अन्तर कर लेता है व 10, 11 शब्दों का जटिल वाक्य बोलता है।

- **बाल्यावस्था में मानसिक विकास** :–

उम्र :– 5 से 6 को 12 वर्ष तक

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :– ''जब बालक 6 वर्ष का होता है तब मानसिक योग्यताओं का पूर्ण विकास हो जाता है।''

6 वर्ष का बालक 13 – 14 तक गिनती गिन लेता हैं।

सामान्य प्रश्नों के उत्तर दे देता है व चित्र को देखकर बनी हुई वस्तुओं के नाम बता देता हैं

7 वर्ष :– बालक में अन्तर करने की योग्यता हो जाती हैं ।

विजेन्द्र राठौड़

8 वर्ष :— बालक छोटी छोटी कहानियों व कविताओं को दोहराने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। व एक पेराग्राफ की कहानी से 5–6 प्रश्नों के उत्तर दे देता हैं।

9 वर्ष :— बालक को दिन, समय, दिंनाक, मुद्रा, नाप, तोल, गणना, द्रव्यमान, आयतन आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

10 वर्ष :— बालक 3 मिनट में 60 से 70 शब्द बोलता है। वह दैनिक जीवन में जो नियम, परम्पराएँ होती है उनसे परिचित हो जाता है।

11 वर्ष :— बालक में निरीक्षण व जिज्ञासा की योग्यता विकसित हो जाती है।

12 वर्ष :— बालक में तर्क व समस्या समाधान की योग्यता विकसित हो जाती है।

मानसिक विकास किशोरावस्था :—

1. मानसिक स्वतन्त्रता
2. मानसिक योग्यताएँ प्राप्त हो जाती है।
3. ध्यान शक्ति का विकास
4. कल्पना शक्ति का विकास, अर्द्ध सपनों, मन तरंग का विकास
5. तर्क शक्ति का विकास
6. चिन्तन शक्ति का विकास
7. रूचियों की विविधता
8. बुद्धि का अधिकतम विकास

हारमोन के द्वारा	15 वर्ष तक
जोन्स व कोमाड	16 वर्ष तक
स्पीयरमेन	14 — 15 वर्ष तक

वुडवर्थ ने कहा :— ''15 से 20 वर्ष तक मानसिक विकास उच्चतम स्तर प्राप्त कर लेता है।''

➢ मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :—

1. वंशानुक्रम
2. परिवार का वातावरण
3. परिवार की सामाजिक स्थिति
4. माता–पिता की शिक्षा
5. विद्यालय का वातावरण
6. शिक्षक का व्यहार
7. शारीरिक स्वास्थ्य
8. समाज का वातावरण

विजेन्द्र राठौड़

समाजिक विकास :–

सामाजिक विकास का अर्थ :– सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करना हैं।

सामाजिक विकास अभिप्राय :– समाज स्वीकृत व्यवहार प्रतिमानों के सीखने की प्रतिक्रिया से है।

शैशव अवस्था में सामाजिक विकास :–

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :– जन्मजात शिशु ना तो सामाजिक प्राणी होता हे ना असामाजिक प्राणी होता हैं । लेकिन इस अवस्था में वह अधिक समय तक नही रह पाता है।

प्रथम महिना :– वह मानव की आवाज को नहीं पहचानता ।

द्वितीय महिना :– केवल मानव की आवाज को पहचानता ।

तीसरा महिना :– वह अपनी माँ को पहचानता हैं।

चौथा महिना :– शिशु अपने पास आने वाले व्यक्ति को बड़े ध्यान से देखता है। और यदि उसके साथ कोई खेलता है तो वह भी खेलता व मुस्कुराता है

पॉचवा व छठा महिना :– परिचित व अपरिचित व्यक्तियों को ध्यान से देखता है व पहचानने लगता हैं। प्रेम व क्रोध में अन्तर करने लग जाता है।

सातवा व आठवा महिना :– शिशु बोले जाने वाली आवाज का अनुकरण करता है।

नवा व दशवा महिना :– शिशु किए जाने वाले व्यवहार का अनुकरण करता है।

प्रथम वर्ष :– मना किए जाने वाले कार्य को नहीं करता हैं।

द्वितीय वर्ष :– परिवार का सक्रिय सदस्य बन जाता है और पारिवारिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर देता हैं।

तीसरा वर्ष :– शिशु गली के बच्चों के साथ खेलना प्रारम्भ कर देता है।

चौथा वर्ष :– शिशु का व्यवहार आत्मकेन्द्रित होता है उसे किण्डर गार्डन विद्यालय में भर्ती करवा दिया जाता है। जहाँ पर वह नए सामाजिक सम्बन्धों की रचना करता है।

पाँचवा वर्ष :– शिशु अपनी वस्तुओं का आदान–प्रदान व साझा करना सीख जाता है।

विजेन्द्र राठौड़

- **बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :–**
  1. बाल्यावस्था का बालक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेता है। जिसकें कारण सर्वप्रथम वह स्वयं को नए वातावरण में समायोजित करता है।
  2. इसके बाद वह विद्यालय के क्रिया कलापों में भाग लेता है। जिससे उसके सामाजिक व्यवहार में उन्नति देखी जाती है।
  3. बालक का सामाजिक विकास सबसे ज्यादा क्रीडा समुह (खेल का मैदान) के कारण विकसित होता है।
  4. बाल्यावस्था का बालक अपने शिक्षक का सम्मान तो करता है । लेकिन उसकी परिहास करने की प्रवृति का दमन नहीं कर पाता है

- बाल्यावस्था का बालक अपने विद्यालय व परिवार और आस पास के व्यक्तियों के बारे में कोई गोपनीय बात का पता करना चाहता है। और उसको सबके सामने बताकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास :–

- किशोर और किशोरियाँ एक–दूसरे के सामने अपनी श्रेष्ठ वेशभूषा व श्रृंगार के साथ उपस्थित होते है।
- किशोर समूह में रहने के कारण प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, सहयोग, सदभावना, सहनशीलता आदि सामाजिक गुण विकसित हो जाते है।
- किशोर विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं में व कार्यो में असफलताओं के कारण उसके सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

संवेगात्मक विकास

- अन्दर से गती करना या उतेजित होना ।
  अर्थ :– उत्तेजित दशा ।
  वुडवर्थ के अनुसार :– संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।

  संवेग दो प्रकार के होते है।
  1. बुरे संवेग (निन्दनिय संवेग) :– क्रोध, घृणा, ईष्या, भय आदि।
  2. अच्छे संवेग (अनिन्दनिय सवेंग) :– प्रेम, हर्ष, आनन्द, करूणा, दया आदि ।

- **शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास :–**
  ब्रिजेस के अनुसार :– जन्म के समय शिशु में उत्तेजना नाम का संवेग होता है। और 2 वर्ष की अवधि में सभी संवेग उत्पन्न हो जाते है।

- **स्पिट्रज के अनुसार** :– जन्म के समय शिशु में कोई संवेग नहीं होता । जैसे जैसे बालक के अंगों का विकास होता है। वैसे वैसे संवेगो का विकास हो जाता है।

  1. शिशु अपने जन्म के समय से ही अपने संवेगो का प्रदर्शन करता है।
  2. शिशु प्रारम्भ में संवेग अस्पष्ट करता है । तथा धीरे धीरे उनमें स्पष्टता आती है।

विजेन्द्र राठौड़

3. शिशु में संवेग अनिश्चित होते है।
4. शिशु में संवेग तीव्र आते है।
5. शिशु के संवेगात्मक अभिव्यक्ति का विकास धीरे धीरे होता है।
6. **एलिस क्रो** :— शिशु अपनों से बड़ों का संवेगात्मक व्यवहार का अनुकरण करता है। यही कारण हैं कि उसे उन सब बातों से डर लगता है। जिनसे उनसे बडे लोगों का डर लगता है।
7. **जोन्स** :— 2 वर्ष के शिशु को साँप से डर नहीं लगता क्योंकि उसमें भय नाम का संवेग विकसित नहीं हुआ होता। लेकिन वही शिशु 3 वर्ष का होने पर अंधेरें से व जानवरों से डरने लगता है। क्योंकि उसने डर नाम का संवेग विकसित हो जाता है।

➢ बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास :—

क्रो एण्ड क्रो :— सम्पूर्ण बाल्यावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति में निरन्तर परिवर्तन होते रहते है।

1. बाल्यावस्था में संवेग स्पष्ट व निश्चित होते है।
2. बाल्यावस्था में संवेगों की तीव्रता में अपेक्षाकृत कमी होती है।
3. बालक के संवेगात्मक विकास में विद्यालय का वातावरण व शिक्षक विशेष रूप से प्रभावित करता है। तथा परिवार का वातावरण ।
4. टोली या समूह में रहने के कारण बालक में ईर्ष्या, घृणा, द्वेष आदि बाधित संवेग आ जाते है।

➢ किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :—

1. दया, प्रेम, क्रोध, करूणा आदि संवेग स्थाई रूप से विकसित हो जाते है।
2. किशोर की शारीरिक शक्ति का उसकी संवेगात्क रूचि उसके व्यक्तित्व पर स्पष्ट रूप से प्रभाव डालती है।
3. जैसे जैसे किशोर का ज्ञान एंव इच्छाएँ बढती है संवेगो के उत्पन्न होने की परिस्थितियों में अन्तर आ जाता है।
4. किशोर विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं में होता है जिसके कारण वह क्रोधी व चिड़चिडा हो जाता है।

विजेन्द्र राठौड़

EDUCATION PSYCHOLOGY

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

इकाई 4

व्यक्तित्व

(Personality) लैटिन भाषा के Persona (परसोना) से बना है जिसका अर्थ होता है। बाहरी आवरण/नकली चेहरा/नकाब/मास्क

प्राचीन समय में बाह्य रूप रेखा के आधार पर व्यक्तित्व परिभाषित किया जाता था।

लेकिन आज परिभाषा बदल चुकी हैं। वर्तमान समय में बाह्य व आन्तरिक गुणों के समावेश को व्यक्तित्व कहा गया हैं।

- **ऑलपोर्ट के अनुसार** :– व्यक्तित्व उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन हैं। जो वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता हैं।
- **कैटल के अनुसार** :– व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम भविष्यवाणी कर सकते हैं। कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में कैसा कार्य करेगा या क्या करेगा।
- **व्यक्तित्व का वर्गीकरण** :–

1. **पाश्चात्य दृष्टिकोण** :–
   क्रेशमर/क्रेचमर के अनुसार :– क्रेचमर ने शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व का पहला वर्गीकरण किया। जिसके 4 प्रकार बताए।
   (1.) स्थूलकाय – नाटे व्यक्ति (पिकनिक)
   (2.) सुण्डौलकाय – खिलाडी प्रवृत्ति (एथलेटिक)
   (3.) क्षीणकाय – दुर्बल शरीर वाले (एसथेनिक)
   (4.) मिश्रित काय – मिले–जुले (डिस्प्लास्टिक)

- शारीरिक संरचना के आधार पर दुसरा वर्गीकरण शैल्डन के आधार किया गया।

1. गोलाकार (एडोमोरफिक) :– शारीरिक सन्तुलन, शारीरिक स्वस्थ, फुर्तीला होता है।
2. आयताकार (मिसोमोर्फिक) :–
3. लम्बाकार (एक्टोमोर्फिक) :– शक्तिहीन

- स्वभाव के आधार पर शैल्डन द्वारा स्वभाव का वर्गीकरण

1. **विसेरोटॉनिक** :– मस्त मोला, खाना–पीना पसन्द, आराम करना पसन्द, प्रेम पसन्द
2. **सोमेटोटॉनिक** :– कर्मठ, शक्तिशाली, साहसी, स्पष्ट भाषी और अधिकार प्रिय।
3. **सेरिब्रोटॉनिक** :– हैरान, परेशान, दुःखी, संकोची, शर्मीले एवं अर्न्तमुखी।

- **हिप्पोक्रेटस का वर्गीकरण** :–

द्रव्य व स्वभाव के आधार पर :–

1. **कफ प्रवृति वाले** :– **(– +)** सुस्त, चिडचिड़ा, संवेगात्मक रूप से कमजोर व शारीरिक रूप से शक्तिशाली रूधिर की मात्रा अधिक व आशावादी।

विजेन्द्र राठौड़

2. **काले पित्त वाले** :– **(– –)** निराशावादी, शक्तिहीन, दुःखी व शारीरिक और संवेगात्मक रूप से कमजोर।
3. **पिले पित्त वाले** :– **(+ +)** शारीरिक व संवेगात्मक रूप से स्थिर व सन्तुलित ।
4. **अधिक रूधिर वाले** :– **(+ –)** संवेगात्मक रूप से सशक्त परन्तु कमजोर।

➢ **समाज शास्त्री के आधार पर वर्गीकरण** :–

स्प्रेन्गर के अनुसार :– स्प्रेन्गर ने समाज शास्त्रिय आधार व्यक्तित्व का छः भागों में वर्गीकरण किया

1. सैद्धान्तिक प्रवृति वाले
2. सामाजिक प्रवृति वाले
3. राजनैतिक प्रवृति वाले
4. सैन्दर्य/कलात्मक प्रवृति वाले
5. आर्थिक प्रवृति वाले
6. धार्मिक प्रवृति वाले

➢ **युंग या जुंग के अनुसार** :–

मनौवैज्ञानिक आधार पर वर्गीकरण :–

➢ युगं द्वारा किया गया वर्गीकरण सबसे प्रसिद्ध माना जाता है।

➢ इन्होंने मनौवैज्ञानिक आधार पर वर्गीकरण किया।

इन्होने 3 प्रकार बताएँ।

1. **अर्न्तमुखी व्यक्तित्व** :– लेखक बनने की योग्यता रखता हो एकान्तप्रिय, विचारशील
2. **बर्हिमुखी** :– शिक्षक व नेता बनने की योग्यता रखता हो
3. **उभयमुखी** :– उचित व्यक्तित्व इसमें अर्न्तमुखी व बर्हिमुखी दोनों प्रकार के व्यक्तित्व के गुण पाए जाते हैं।

भारतीय दृष्टिकोण से वर्गीकरण :–

तीन प्रकार से – सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी

1. **सतोगुणी** :– ईश्वर व धर्म में विश्वास रखने वाला
2. **रजोगुणी** :– कर्म में विश्वास।
3. **तमोगुणी** :– सुख प्राप्ति, विलासी प्रवृति वाला।

आधुनिक दृष्टिकोण से वर्गीकरण :–

तीन प्रकार से – भावुक, कर्मशील, विचारशील

1. **भावुक** :–
2. **कर्मशील** :– अपने कर्म में विश्वास।
3. **विचारशील** :– हर कार्य को विचार करके करने वाला

➢ **नोट** :– संवेगिय रूप से स्थिरता वाले व्यक्ति का उचित व्यक्तित्व होता है।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक :–

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. शारीरिक संरचना का प्रभाव
4. मानसिक योग्यता का प्रभाव
5. विशिष्ट रूचि का प्रभाव
6. सांस्कृतिक वातावरण
7. परिवार व विद्यालय का वातावरण

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत :–

प्रतिपादन – सिगमंड फ्रायड

– जन्म – 6 मई 1856

– मृत्यु – 23 सितम्बर 1939

निवासी – आस्ट्रिया (वियना में)

- सिगमंड फ्रायड ने मन की तीन दशाएँ बतायी हैं।

1. चेतन मन $\frac{1}{10}$:– मस्तिष्क की जागृत अवस्था
2. अचेतन मन $\frac{9}{10}$:– कटु अनुभूतियो दुःखद बाते तथा दमित इच्छाओं का भण्डार।
3. अर्द्धचेतन मन 00 :– चेतन व अचेतन के बीच की अवस्था। याद के हुई बातो को भूल जाना, अटक जाना, हकलाना आदि बाते अर्द्धचेतन को प्रदर्शित करती हैं।

सिगमंड फ्रायड के व्यक्तिगत सरचंना की दृष्टि से तीन अवस्थाएँ बताई हैं। (सन 1923)

1. **Id (इदम्)** :– सुखवादी सिद्धांत पर आधारित, पशु प्रवृति का, अचेतन मन का राजा। अर्थात् दम्भित इच्छाओं को पूर्ण करने वाला।
2. **Ego (अहम्)** :– वास्तविक सिद्धांत पर आधारित, चेतन मन का स्वामी।
3. **Super ego (परम् अदम्)** :– आदर्शवादी सिद्धांत पर आधारित।

सिगमंड फ्रायड ने दो मूल प्रवृत्तियाँ बताई हैं।

1. जीवन
2. मृत्यु

- **स्वमोह (नार्सिज्जिम)** :– एक बालक की कहानी द्वारा समझना।

ऑडिपस व एलेक्ट्रा ग्रंथि

- सिगमंड फ्रायड के अनुसार लडकों में **ऑडिपस** ग्रंथि पाई जाति हैं। जिसके कारण वे अपनी माँ से अधिक प्रेम करेंगे।

तथा लड़कियों में **एलेक्ट्रा** ग्रंथि पाए जाने के कारण व अपने पिता से अधिक प्रेम करती हैं।

- **लिबिडो (Libido)** :– प्रेम, स्नेह व काम प्रवृत्ति को लिबिडो कहते हैं।

यह एक स्वभाविक प्रकृति होती हैं और यदि इस प्रवृति का दमन किया जाता हैं, तो व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता हैं।

- **शैशव कामुकता** :– शैशव कामुकता की बात पर सिगमंड फ्रायड व उनके शिष्य जुग या युग के मध्य मतभेद हो जाता है।

मतभेद के उपरान्त युग ने एक अपना सिद्धांत प्रतिपादन किया – जिसका नाम था **विश्लेषणात्मक सिद्धांत**

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

प्रेक्षपण / प्रक्षेपी विधियाँ

(1) T.A.T.
(2) C.A.T
(3) I.B.T.
(4) S.C.T.
(5)F.W.A.T.

अप्रक्षेपी / अन्य विधिया

I आत्मनिष्ठ या व्यक्ति निष्ठ

(1) आत्म कथा विधि
(2) व्यक्ति इतिहासविधि
(3) साक्षात्कार
(4) प्रश्नावली

II वस्तुनिष्ठ विधि

(1) समाज मिति विधि
(2) कार्य / कर्मनिर्धारण विधि
(3) शारीरिक परीक्षण
(4) निरीक्षण विधि

- **प्रमापीकृत / मानकीकृत** :– जिस परीक्षण की विश्वसनियता या वैधता की जाँच की जा चुकी हो ऐसा परीक्षण प्रमापीकृत या मानकीकृत कहलाता हैं।
- **विश्वसनियता** :– एक ही परीक्षण को एक ही समूह द्वारा बार–बार प्रयोग किए जाने पर भी यदि अंको में समानता पाई जाती हैं तो ऐसा परीक्षण विश्वसनिय परीक्षण कहलाता हैं।
- **वैधता** :– जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए परीक्षण बनाया गया है वह उस उद्देश्य पर खरा उतरता है तो ऐसा परीक्षण वैध परीक्षण कहलाता हैं।

1. **प्रक्षेपण विधियाँ** :– प्रक्षेपण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सिगमंड फ्रायड ने किया।
   प्रक्षेप का अर्थ :– अपनी बातों, विचारों, भावनाओं, अनुभवों आदि को स्वयं न बताकर किसी अन्य उद्दीपक या पदार्थ के माध्यम से अभिव्यक्त करना।
   नोट :– प्रक्षेपण विधियों के माध्यम से अचेतन मन की बातों को ज्ञात किया जाता हैं।

(i) T.A.T. (Thematic Apperception Test) :- प्रासगिंक अर्न्तबोध परीक्षण या कथा प्रसंग परीक्षण:–

प्रतिपादक – मार्गन व मुर्रे

सन – 1935

कुल कार्डो की संख्या :– 30+1 = 31

इस परीक्षण पर दस कार्डो पर पुरूषों से सम्बन्धित व 10 कार्डो पर महिलाओं से सम्बन्धित। व 10 कार्डो पर दोनो के चित्र बने होते हैं।

बालकों को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता है कम से कम 10 कार्डो पर कहानी लिखवाई जाती हैं।

विजेन्द्र राठौड़

इस परीक्षण में 14 वर्ष से अधिक आयु वाले बालको के लिए प्रयोग किया जाता हैं।

नोट :– इसमें व्यक्ति की रूचियाँ, इच्छाओं व आवश्यकताओं की जानकारी होती हैं।

(ii) C.A.T. (Childern Apperception Test) :- बाल सम प्रत्यक्ष परीक्षण :–

प्रतिपादक – ल्योपोल्ड बेलोक (1948)

विकास में योगदान :– डॉ. अरनेष्ट क्रिस

कार्डो की संख्या :– 10

- इस परीक्षण में 10 कार्डो पर जानवरों के चित्र बने होते है। बालकों को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता हैं। यह परीक्षण 3 से 11 वर्ष के बालकों के लिए उपयोगी होती हैं।

(iii) I.B.T. (Ink Blot Test) :- रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण :–

प्रतिपादक :– हरमन रोर्शा (1921)

कार्डो की सं. :– 10

- इस परीक्षण मे 10 कार्डो पर स्याही के धब्बे बने होते हैं। 5 कार्डो पर काले व सफेद तथा बाकी पाँच पर विभिन्न रगों के धब्बे बने होते हैं।

बालकों को आकृति दिखाकर उसके बारे में पूछा जाता हैं। इसमें बालकों के क्रियात्मक, भावनात्मक व संज्ञानात्मक परीक्षण किए जाते हैं।

(iv) S.C.T. (Sentence Complant Test) :- वाक्य पूर्ति :–

प्रतिपादक :– पाइन एण्ड टैण्डलर (1930)

विकास में योगदान :– रोटर्स

उदाहरण :– मै बहुत खुश होता हूँ, जब मेरे माता पिता ....मुझे देते हैं।

(v) स्वतन्त्र शब्द साहचर्य परीक्षण (F.W.A.T.) :–

यह एक मनोविश्लेषणात्मक विधि हैं।

प्रतिपादक – फ्रासिस गाल्टन

सन – 1879

सहयोग – विलियम वुण्ट

नोट :– इस परीक्षण में व्यक्तित्व मापन के अलावा कई मनोवैज्ञानिक रोगों का इलाज भी किया जाता हैं।

अप्रक्षेपी या अन्य विधियाँ :– चेतन मन का अध्ययन

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

(1) आत्मनिष्ठ या व्यक्ति निष्ठ :–

(i) आत्मकथा या अर्न्तदर्शन विधि :–

प्रवर्तक – विलियम वुण्ट व शिष्य टिचनर

यह एक प्राचीनतम विधि है। यह एक मनोवैज्ञानिक विधि नही है इसके कारण इनका वर्तमान समय में उपयोग नही किया जाता हैं।

(ii) व्यक्ति इतिहास विधि/जीवन कृत विधि/केश स्टेडी :–

प्रवर्तक – टाइडमैन

निदानात्मक अध्ययनों की सर्वश्रेष्ठ विधि हैं। असामान्य बालकों के निदान की सर्वश्रेष्ठ विधि हैं।

समस्या के कारण को जानना निदान कहलाता हैं। जो मनोविज्ञान की सहायता से किया जाता है तथा कारण को दूर करना उपचार कहलता है जो शिक्षा की सहायता से किया जाता है।

बिना निदान के उपचार सम्भव नही हैं।

(iii) प्रश्नावली विधि :–

प्रवर्तक :– वुडवर्थ

प्रश्नावली में आमने–सामने होना जरूरी नही होता और उत्तर के रूप में विकल्प होते हैं।

(iv) साक्षात्कार विधि :–

साक्षात्कार विधि का प्रारम्भ अमेरिका में हुआ।

साक्षात्कार में आमने–सामने होना जरूरी नहीं होता है। इसमें प्रश्नों का कोई बंधन नही होता है व ना ही समय पर।

साक्षात्कार वार्तालाप का एक रूप माना जाता है।

(2) वस्तुनिष्ठ विधियाँ :–

(i) निरीक्षण विधि या बहिदर्शन विधि :–

प्रवर्तक :– वाटसन

इस विधि में सामने वाले व्यक्ति के व्यवहार का भिन्न–भिन्न परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है। और निष्कर्ष निकाला जाता है कि विषयी का व्यक्तित्व कैसा हैं।

(ii) समाजमीति विधि :– प्रवर्तक :– J.L. मोरेनो

विजेन्द्र राठौड़

इस विधि में व्यक्ति की सामाजिकता के बारे में समाज के व्यक्तियों से जानकारी लेकर निष्कर्ष निकाला जाता हैं। कि विषयी का व्यक्तित्व कैसा हैं।

(iii) कर्म निर्धारण मापनी/रेटिंग स्केल :–

प्रतिपादक – थर्स्टन

पूर्ण सहमत सहमत अनिश्चित असहमत पूर्ण असहमत

इस परीक्षण में क्रम निर्धारण मापनी के माध्यम से आँकडे एकत्रित करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि विषयी का व्यक्तित्व कैसा हैं।

(iv) शारीरिक परीक्षण :–

इस परीक्षण में व्यक्ति की शारीरिक जाँच करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि निर्धारित नौकरी के लिए व्यक्ति स्वस्थ है या नही।

विजेन्द्र राठौड़

समायोजन

➢ **समायोजन का अभिप्राय/ तात्पर्य :–**

समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताएँ व उनको पूरा करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करने से हैं।

जो व्यक्ति इन दोनों के बीच तालमेल स्थापित नही कर पाता।

ऐसा व्यक्ति तनाव चिंता, कुंठा आदि का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लगता है।

इसी स्थिति को कुसमायोजन अथवा मानसिक रोग कहते हैं।

➢ **स्किनर के अनुसार :–** ''समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है ''

➢ **मानसिक रोग :–**

(1) तनाव

(2) दुश्चिन्ता

(3) दबाव

(4) भग्नासा/कुंठा

(5) द्वन्द्व या संघर्ष

(1) तनाव :– जब व्यक्ति समय परिस्थिति व आवश्यकता के अनुसार कार्य नही कर पाता है तथा असफल हो जाता है तो वह तनाव का शिकार होता है।

(2) दुश्चिन्ता :– जब अचेतन मन की दम्भित इच्छा चेतन मन में आने का प्रयास करती है या आ जाती है तो व्यक्ति दुश्चिन्ता का शिकार हो जाता हैं।

(3) दबाव :– सफलता व असफलता तथा आत्म सम्मान की रक्षा के समय व्यक्ति दबाव महसूस करता हैं।

(4) भग्नासा/कुंठा :– बार–बार प्रयत्न करने के बावजुद भी जब व्यक्ति असफल हो जाता है तो वह निराश हो जाता है। इसी निराशा को मनोवैज्ञानिक भाषा में भग्नासा या कुंठा कहते है।

(5) द्वन्द्व या संघर्ष :– जब एक साथ दो अनुकूल अवसर उपस्थित हो जाते है और चयन किसी एक का करना होता है तो मस्तिष्क में द्वन्द्व या संघर्ष उत्पन्न हो जाता हैं।

➢ **मानसिक मनोरचनाएँ/समायोजन तन्त्र/आत्म सुरक्षात्मक शक्तियाँ/आत्म सुरक्षा अभियात्रिकाएँ या प्रतिरक्षण प्रणालियाँ या रक्षा तन्त्र :–** मानसिक मनोरचनाएँ वे साधन है जिनको व्यक्ति मानसिक रोगों से बचने या समायोजन स्थापित करने के लिए उपाय के रूप में अपनाता है।

➢ **मानसिक मनोरचनाएँ दो प्रकार की होती है :–**

1. प्रत्यक्ष
2. अप्रत्यक्ष

1. प्रत्यक्ष उपाय :–

(i) बाधाओं को दूर करना

(ii) अन्य मार्ग खोजना

(iii) लक्ष्य का प्रतिस्थापन

(iv) विश्लेषण एवं निर्णय

विजेन्द्र राठौड़

2. अप्रत्यक्ष उपाय :–

(i) दमन :– दमन शब्द का सर्वप्रथम् प्रयोग – सिगमंड फ्रायड

कटु अनुभूतियाँ, दुःखद बाते अतृप्त इच्छाएँ आदि को बलपूर्वक भूला देना, दमन कहलाता है।

(ii) दिवास्वप्न / मनतरंग / कल्पना प्रवाह :–

हकीकत मे जिन इच्छाओं की पूर्ति नही होती है उनकों कल्पना के माध्यम से पूर्ण करके क्षणिक आनन्द या सन्तुष्टि प्राप्त कर लेना दिवास्वप्न कहलाता हैं। दिवास्वप्न की अधिकता अपराधी बना सकती हैं। दिवास्पप्न की अधिकता किशोरावस्था में होती हैं।

(iii) प्रक्षेपण :– अपनी असफलता का दोष किसी पर भी लगाकर अपने आप को सन्तुष्ट कर लेना।

उदाहरण :– नाच न जाने आंगन टेडा।

परीक्षा में असफल होने पर तबियत को दोष देना।

(iv) औचित्य स्थापन :– किसी भी कारण से कोई पद या वस्तु प्राप्त नही होती है उसी पद या वस्तु में दोष निकालकर अपने आप को सन्तुष्ट करना यही औचित्य स्थापन हैं।

उदाहरण :– लोमडो द्वारा अगूंर खट्टे बताना।

RAS नही बन पाने पर उसी पद में दोष निकालना।

(v) आश्रित होना :– कर्महीन व्यक्ति पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होकर अपने आप को समायोजित करता हैं।

(vi) प्रतिगमन :– जो वर्तमान स्थिति व्यक्ति को तनाव देती है उससे बचने के लिए अपनी पूर्व स्थिति की और लौट आना प्रतिगमन कहलाता हैं।

उदाहरण :–

- **एक वयस्क का बच्चों की तरह फूट–फूटकर रोना।**
- **एक लड़की का वापस अपने पीहर आकर अपनी माँ की गोद में सो जाना।**

(vii) तादात्मिकरण :– समायोजन स्थापित करने के लिए व्यक्ति अपना परिचय किसी ऐसे व्यक्ति के साथ तालमेल स्थापित कर देता है जिसें कोई पद या प्रतिष्ठा प्राप्त होती है व्यक्ति ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का अनुकरण करने लगता हैं।

(viii) शोधन / मार्गान्तिकरण / शुद्धिकरण :– असामाजिक प्रवृत्तियों को सामाजिक प्रवृत्तियाँ कर समायोजन स्थापित करना ही शोधन हैं।

क्षतिपूर्ती उपाय / क्षतिप्रक उपाय :– जिस क्षेत्र में व्यक्ति कमजोर है उसकी क्षतिपूर्ति किसी अन्य क्षेत्र या साधन के माध्यम से कर अपने आप को समायोजित करता हैं।

विजेन्द्र राठौड़

उदाहरण :–

- विकलांग बालक कक्षा में प्रथम आकर अपने आप को समायोजित करना।
- कम उँचाई वाली लड़की उँची ऐड़ी के सैडिल पहन कर अपने आप को समायोजित करती है।

आक्रामक उपाय :–

1. प्रत्यक्ष
2. अप्रत्यक्ष

1. **प्रत्यक्ष आक्रामक उपाय :–** जो व्यक्ति आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाता हैं। उसी पर आक्रमक कर अपने आप को संतुष्ट करना।
2. **अप्रत्यक्ष आक्रामक उपाय :–** जो व्यक्ति आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाता है उसका बदला अन्य तरीके से लेकर अपने आप को सन्तुष्ट करना।

उदाहरण :– कुम्हार कुम्हारी को तो जीतता नहीं, गधी के कान ऐंठता है।

विजेन्द्र राठौड़

समायोजन के प्रतिमान :–

सिगमड फ्रायण के अनुसार :–

(i) अचेतन मन समायोजन का आधार हैं।

(ii) Ego अहम्, अवस्था समायोजन का आधार हैं।

(iii) Libido प्रवृत्ति समायोजन का आधार हैं।

- **एडलर के अनुसार** :– श्रेष्ठता प्राप्ति ही समायोजन का आधार हैं।

- **युंग के अनुसार** :–

(i) आत्म सिद्धि ही समायोजन का आधार हैं।

(ii) दिल (भावनाएं) दिमाग (विचार) में सतुंलन बनाए रखना ही अपना सिद्धि हैं।

स्वपन

- **सिगमंड फ्रायड** :– सिगमंड के अनुसार स्वप्न अचेतन मन का स्वरूप हैं।
- **एडलर कें अनुसार** :– स्वप्न चेतन मन का स्वरूप हैं।
- **युंग के अनुसार** :– स्वप्न अचेतन, चेतन व अर्द्धचेतन तीनो का प्रतिरूप हैं।

नोट :– सिगमंड फ्रायड के विचारों को प्रमुखता दी जाती है।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

इकाई 5

बुद्धि (Intellingence)

बुद्धि की परिभाषा :– सोचने समझने की योग्यता ही बुद्धि है

टर्मन के अनुसार :– बुद्धि अमूर्त विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है ।''

बकिनधम के अनुसार :– ''सीखने की योग्यता ही बुद्धि हैं।''

वुडवर्थ के अनुसार :– ''बुद्धि कार्य करने की एक विधि हैं।''

मन के अनुसार :– ''नवीन परिस्थितियों को झेलने की मस्तिष्क की नमनीयता ही बुद्धि है।''

डियर बर्ड/बोर्ड :– ''अनुभव के अनुसार लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि हैं।''

बर्ट के अनुसार :– ''उचित प्रकार से समझने विचार करने व तर्क करने की योग्यता बुद्धि है।''

बुद्धि की विशेषताएँ :–

1. बुद्धि जन्मजात शक्ति व योग्यता है।
2. बुद्धि एक विकासशील एंव परिवर्तन योग्यता है।
3. बुद्धि पर वशांनुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पडता है।
4. बुद्धि पर लिंगभेद का कोई प्रभाव नहीं पडता है।
5. बुद्धि आयु व परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती हैं।
6. बुद्धि में 10 बिन्दुओं तक परिवर्तन होता है।
7. बुद्धि एक इकाई ना होकर इकाइयों का समूह हैं।
8. उचित प्रकार से उत्तर देना तर्क वितर्क करना चितंन करना कल्पना करना आदि योग्यता ही बुद्धि है।
9. सीखने की योग्यता ही बुद्धि हैं।
10. प्रत्येक वातावरण में समायोजन स्थापित करने की योग्यता ही बुद्धि है।
11. अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि है।
12. अमूर्त विचारों के बारे में चितंन करने की योग्यता ही बुद्धि है।

बुद्धि के प्रकार :–

थार्नडाइक व गेरेट के अनुसार 3 प्रकार की बुद्धि होती है।

1. मूर्त बुद्धि
2. अमूर्त बुद्धि
3. सामाजिक बुद्धि

1. मूर्त बुद्धि :– इसे गायक या यांत्रिक बुद्धि भी कहते है इस बुद्धि का सम्बध यंत्रों व मशीनों से होता है।

विजेन्द्र राठौड़

2. **अमूर्त बुद्धि** :– इस बुद्धि का सम्बन्ध पुस्तकीय ज्ञान से होता है।
3. **सामाजिक बुद्धि** :– इस बुद्धि का सम्बन्ध सामाजिक अनुकूलनशीलता से होता हैं।

बुद्धि के सिद्धांत

1. **एकतत्व सिद्धांत** :– अल्फ्रेड बिने ने 1911 में दिया इसमें एकतत्व होता है सामान्य तत्व

नोट :– इस निरंकुशवादी सिंद्धांत भी कहते है।

सहयोगी – टर्मन व स्र्टन

2. **द्वितत्व सिद्धांत** :– प्रवर्तक – स्पीयर मेन 1904 द्वारा ब्रिटेन (लंदन) के ।
   इन्होने बुद्धि के दो तत्व बताए –
   1. **सामान्यतत्व** – जन्मजात
   2. **विशिष्ट तत्व** – अर्जित

बाद में स्पीयर मेन एक ओर तत्व समूह तत्व जोड़ दिया और सिद्धांत कहलाया – **त्रितत्व सिद्धांत**

3. **बहुतत्व सिद्धांत** :– प्रतिपादक – थार्नडाइक (U.S.A)
   थार्नडाइक के अनुसार व्यक्ति जितनी भी मानसिक क्रियाये करता है। उतने तत्व बुद्धि के अन्तर्गत पाये जाते है।

- थार्नडाइक ने अपने सिद्धांत की तुलना बालू के ढेर से करते हुये ऊँचाई ,चौडाई , क्षेत्र व गति की चर्चा की है।

इस आधार पर यह सिद्धांत कहलाया।
बालूका सिद्धांत – (मात्रा सिद्धांत) परमाणुवादी सिद्धांत कहलाया।

4. **समूह तत्व सिद्धांत** :–
   प्रवर्तक – थर्स्टन (U.S.A)
   सन् – 1938
   पुस्तक – Primary Mantal Aleality (प्राथमिक मानसिक योग्यताए)
   इन्होने कुल 13 तत्व बताए । ओर इनमें से 7 तत्वों का प्रमुख तत्व बताया ।

उपनाम :– प्राथमिक मानसिक योग्यता सिद्धांत

1. **प्रेक्षण तत्व योग्यता** :–
   Special Ability = S
2. **अंक योग्यता** :–
   Number Ability = N
3. **शाब्दिक योग्यता** :–

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

Verbal Ability =V

4. **वाक् योग्यता :–**

Ward Ability =w

5. **स्मरण शक्ति :–**

Memory Ability =M

6. **तार्किक योग्यता :–**

Reasoning Ability =R

7. **प्रर्यवेक्षण योग्यता :–**

Peraptual Ability = P

S+N+V+W+M+R+P = Intelligence

(5) प्रतिदर्श का सिद्धांत :– सन् 1955

प्रवर्तक – थॉमसन

निवासी – (U.S.A)

उपनाम :– नमूना सिद्धांत

थॉमसन के अनुसार व्यक्ति में सभी मानसिक योग्यताओं का थोड़ा – थोड़ा सैम्पल पाया जाता है।

(6) त्रि आयाम सिद्धांत :–

प्रतिपादक – गिलफर्ड

निवासी – रूस

पद – 3 पद बताए

सन् – 1967

इन्होने तीन पद बताए :–

1. संक्रिय / प्रक्रिया
2. विषय वस्तु / अर्न्तवस्तु
3. उत्पादन / परिणाम

1. **संक्रिया या प्रक्रिया :–** समस्या समाधान के लिए व्यक्ति जी मानसिक प्रक्रिया से गुजरता है उसे संक्रिया /प्रक्रिया कहते है।
2. **विषय वस्तु/अर्न्तवस्तु :–** समस्या समाधान के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती हें उसे विषय वस्तु /अर्न्तवस्तु कहते है।
3. **उत्पादन/परिणाम :–** समस्या समाधान के लिए जिस रूप में सूचनाएँ प्राप्त होती है उसे उत्पादन परिणाम कहते है।

विजेन्द्र राठौड़

गिलफर्ड ने सन् 1967 में डिब्बे के आकार का एक मॉडल प्रस्तुत किया। जिसे बुद्धि सरचना मॉडल कहते है।
इस मॉडल के अन्तर्गत 5 X 4 X 6 = 120
सन् 1977 में कोषों की संख्या – 5 X 5 X 6 =150
सन् 1980 में कोषों की संख्या – 6 X 5 X 6=180

अन्य सिद्धांत :–

1. **त्रि चापित सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक – स्टर्न बर्ग
2. **तरल ठोस बुद्धि सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक – कैटल
3. **विकासात्मक सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक – जीन पियाजे
4. **बुद्धि का (क) व (ख) सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक :– हैव
5. **लेवल 1 व लेवल 2 सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक :– जॉनसन
6. **पदानुक्रमिक सिद्धांत :–**
   प्रतिपादक :– बर्ट व नर्मन

- **बुद्धि मापन के सोपान :–**

1. **वास्तविक आयु** – Chronological Age = C.A.
2. **मानसिक आयु** – Mental Age = M.A.
3. **बुद्धिलब्धि** – Intelligence Quotient = I. Q.

बुद्धि का इतिहास :–

1. सर्वप्रथम इग्लैंण्ड़ के फ्रांसिस गाल्टन ने 1885 में जनता का ध्यान बुद्धि की तरफ खींचा या आकर्षित किया ।
2. सर्वप्रथम कैटल ने पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में 1890 में ''Mental test & measurement'' नामक पुस्तक प्रकाशित की ।
3. मानसिक परीक्षण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कैटल ने किया ।
   मानसिक आयु शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अल्फ्रेडबिने ने 1908 में किया ।
   बुद्धिलब्धि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम टर्मन ने किया ।
   सर्वप्रथम स्टर्न व कुहलमान ने बुद्धिलब्धि का सुझाव देते हुए सन 1912 में सूत्र दिया।

$$\frac{M.A.}{C.A}$$

विजेन्द्र राठौड़

संशोधित सूत्र टर्मन के द्वारा 1916 में दिया

$$\frac{M.A.}{C.A} \times 100$$

बद्धि परीक्षण का इतिहास :–

1. सबसे पहले बुद्धि परीक्षण फ्रांस के निवासी अल्फ्रेड बिने ने साइमन की सहायता से सन 1905 में तैयार किया जिसका नाम था । बिने साइमन बुद्धि परीक्षण और यहाँ प्रश्नों की संख्या 30 थी ।
   इस परीक्षण में पहला सशोधन सन 1908 में व दूसरा संशोधन 1911 में किया गया व प्रश्नों की संख्या – 59 थी ।
   सन 1961 मे अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में टर्मन की अध्यक्षता में बिने साइमन बुद्धि परीक्षण का संशोधन किया गया।

   तथा संशोधित परीक्षण कहलाया – स्टेन फोर्ड बिने परीक्षण या टर्मन बुद्धि परीक्षण व प्रश्नो की संक्ष्या – 90

- भारत में सबसे पहला बुद्धि परीक्षण 1922 में एफ जी कालेज व लाहोर के प्रिंसिपल डॉ C.H. Rice के द्वारा बनाया गया।

- डॉ C.H. Rice ने बिने साइमन बुद्धि परीक्षण का भारतीय अनुकूलन किया। तथा परीक्षण कहलाया– हिन्दुस्तानी बिने परफोमेन्स पॉन्इट स्केल।
  यहाँ कथनों की संख्या 35 व उपकथन 7 रखे गए।

- भारत में C.H. Rice के अलवा पण्डित लज्जा शंकर झां डॉ सोहन लाल भाटिया, जलोटा आदि के द्वारा भी अनेक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया।

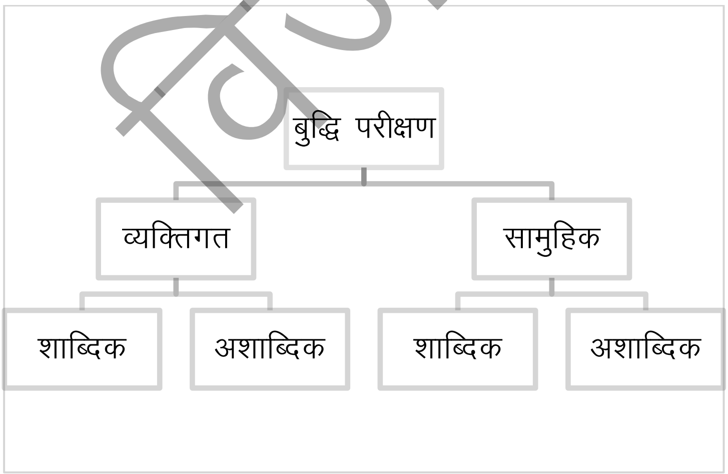

- **शाब्दिक परीक्षण** :– शाब्दिक परीक्षण के होते हैं। जिनमें शब्दों का प्रयोग होता है बोलकर या लिखकर।
- **अशाब्दिक परीक्षण** :– अशाब्दिक परीक्षण वे होते है जिनमें शब्दों का प्रयोग नही होता हैं।

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

जैसे :– भूल–भूलैया परीक्षण – (पोर्टियस ने दिया)
वस्तु संयोजन परीक्षण – (वेसलर)
चित्रपूर्ती परीक्षण – (पेपर पेन्सिल)
ब्लाक बिल्डिंग परीक्षण –
मनुष्य कृष्णा परीक्षण –

विभिन्न भाषी, विकंलाग (गूंगे, बहरे, अन्धे) अनपढ़ तथा सैनिको की छँटनी के लिए अशाब्दिक परीक्षण सहयोगी है।

- वर्तमान समय में प्रचलित हैं। – सामुहिक शाब्दिक परीक्षण
- बुद्धि मापन के लिए सर्वोच्च परीक्षण व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण हैं।
- टर्मन ने अशाब्दिक परीक्षणों की आलोचना करते हुए। शाब्दिक परीक्षणों को उचित ठहराया और कहाँ कि वो परीक्षण उचित परीक्षण नहीं होता जिसमें भाषा का प्रयोग न हुआ हो।
- सबसे पहला व्यक्तिगत शाब्दिक बुद्धि परीक्षण फ्रांस में 1905 में बनाया गया। जिसका नाम था – बिनेसाइमन बुद्धि परीक्षण।
- ओटियर्क्स ने अमेरिका में प्रथम विश्वयुद्ध के समय सन 1917 में सैनिकों की छँटनी करने के लिए दो प्रकार के सामुहिक परीक्षणों का निर्माण किया।

1. **आर्मी अल्फा परीक्षण** :– सामुहिक शाब्दिक (अधिकारियों के लिए)
2. **आर्मी बीटा परीक्षण** :– सामुहिक अशाब्दिक परीक्षण (सेना में अन्य कर्मचारियों के लिए)

- बुद्धि परीक्षण के माध्यम से मानसिक आयु ज्ञात की जाती है
- **बेसल वर्ष** :– जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को बालक हल कर देता है। उसे बेसल वर्ष कहते हैं और यहीं उसकी मानसिक योग्यता/आयु होती हैं।
- **टर्मिनल वर्ष** :– जिस आयु स्तर के प्रश्नों को बालक हल नहीं कर पाता है। उसे टर्मिनल वर्ष कहते हैं।

नोट :– 16 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों का बुद्धि मापन करते समय सूत्र में वास्तविक आयु का मान 16 ही रखा जाता हैं।
टर्मन ने सन 1916 में स्टर्लफोर्ड बिने परीक्षण के समय बुद्धि लब्धि के वर्गीकरण की तालिका तैयार की जो निम्नलिखित है।

विजेन्द्र राठौड़

बुद्धि लब्धि		**बुद्धि वर्ग**
140 से अधिक	2%	प्रतिभाशाली
120–139	7%	प्रखर बुद्धि
110–119	16%	तीव्र बुद्धि
90–109	50%	सामान्य बुद्धि / औसत
80–89	16%	मन्द या पिछडा बालक (मंगोलिज्म)
70–79	7%	निर्बल बुद्धि
70 से कम	2%	मूर्ख

70 से कम के प्रकार :–

50–69	मूर्ख
25–49	मूढ़
25 से कम	जड़

- **संवेगात्मक बुद्धि** :– ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग सन 1990 में दो अमेरिकन प्रोफेसर डॉ जॉन मेयर व पीटर सेलों के द्वारा किया गया।

लेकिन वर्तमान समय में जिस रूप में संवेगात्मक बुद्धि की सर्वत्र चर्चा की जा रही हैं। इसका प्रमुख श्रेय एक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल डोलमेन को जाता है

इन्होने 1995 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ''संवेगात्मक बुद्धिः'' बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों ? के माध्यम से इसे चर्चा का विषय बनाया।

- **संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य** :– अपनी तथा दुसरों की भावनाओं को जानने, समझने तथा उनका उचित प्रबन्धन करने से हैं।
- **संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता** :–

1. कोई व्यक्ति जीवन में कितना सफल हो सकता हैं। इसकी भविष्य वाणी संवेगात्मक बुद्धि द्वारा की जा सकती हैं।
2. जीवन को सुखमय व शांतिप्रिय बनाने में संवेगात्मक बुद्धि योगदान देती हैं।
3. विद्यार्थी जीवन में मिलने वाली सफलता के पीछे भी संवेगात्मक बुद्धि का योगदान होता है।
4. सम्बन्धो में प्रगाढ़ता लाने में भी संवेगात्मक बुद्धि का योगदान हैं।
5. जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में वांछित सफलता प्राप्त करने में संवेगात्मक बुद्धि का योगदान रहता हैं।

विजेन्द्र राठौड़

इकाई – 6

अभिप्रेरणा

Motivation = अभिप्रेरणा

लेटिन भाषा :– Motum/ Movers

अर्थ :– To Move = गति प्रदान करना

- **महत्त्वपूर्ण परिभाषाएँ** :– अभिप्रेरणा वे सभी कारक है। जो प्राणी के शरीर को कार्य करने के लिए गति प्रदान करता हैं।
- अभिप्रेरणा ध्यान आकर्षण प्रलोभन या लालच की कला हैं। जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए तैयार करती हैं।
- **स्किनर** :– ''अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोच्च राजमार्ग या स्वर्णपथ हैं।''
- **सोरेन्सन के अनुसार** :– ''अभिप्रेरणा को अधिगम का आधार कहा हैं।''
- **गुड के अनुसार** :– ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने जारी रखने व नियन्त्रण करने की प्रक्रिया हैं।''
- **गेट्स एवं अन्य के अनुसार** :– ''अभिप्रेरणा प्राणी के भीतर वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशाएँ है जो उसे एक विशेष प्रकार कार्य करने के लिए तैयार करती हैं।''
- **मेक्डूगल के अनुसार** :– ''अभिप्रेरणा की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृतियों के आधार पर की जा सकती हैं।''
- **अभिप्रेरणा के प्रकार** :– साधारण तौर पर अभिप्रेरणा दो प्रकार की होती हैं।

  (1) जन्मजात अभिप्रेरणा

  (2) अर्जित अभिप्रेरणा

(1) जन्मजात अभिप्रेरणा/आन्तरिक/प्राथमिक/जैविक/सकारात्मक/अन्तंनोद अभिप्रेरणा :–
भूख, प्यास, नींद, काम, मलमूत्र, त्याग आदि

(2) अर्जित <u>अभिप्रेरणा/बाह्य/द्वितियक/अजैविक/नकारात्मक/सामाजिक</u> :–
पद प्रतिष्ठा, पुरस्कार, सम्मान आदि।

- **अब्राहम मैस्लो** :– अभिप्रेरणा के प्रकार।
  1. जन्मजात
  2. अर्जित
- **थाम्पसन के अनुसार** :– दो प्रकार अभिप्रेरणा के।

  (1) स्वभाविक

  (2) कृत्रिम
- **गैरेट** :– तीन प्रकार

  (1) जैविक (दैहिक) – संवेग

  (2) मनोवैज्ञानिक – मूल प्रवृत्तियाँ उदाहरण– क्रोध, भय, प्रेम, दुःख

  (3) सामाजिक – सम्मान, आत्मसुरक्षा, आत्मप्रदर्शन

विजेन्द्र राठौड़

- **अभिप्रेरणा चक्र** :– मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए अभिप्रेरणा चक्र का प्रतिपादन किया।

  इसमें तीन सोपान होते है।

  (1) आवश्यकता (Need)

  (2) चालक/अर्न्तनोद/प्रणोद (Drive)

  (3) प्रोत्साहन/उद्दीपक (Incentive)

(1) आवश्यकता (Need) :– प्राणी के शरीर में जब किसी चीज की कमी या अति की अवस्था किसी कारण से उत्पन्न होती हैं। उसे आवश्यकता कहते हैं।

(2) चालक/अर्न्तनोद/प्रणोद (Drive) :– प्राणी में जब आवश्यकता उत्पन्न होती हैं तो इस आवश्यकता के कारण प्राणी तनावग्रस्त हो जाता हैं। और पहले से अधिक सक्रिय हो जाता हैं। इसी तनाव या सक्रियता को चालक कहते हैं।

(3) प्रोत्साहन/उद्दीपक (Incentive) :– प्रोत्साहन प्राणी को अपनी तरफ आकर्षित करता है इसकी प्राप्ति से आवश्यकता सन्तुष्ट हो जाती है और चालक की चालकता में कमी आ जाती है।

M = N + D + I

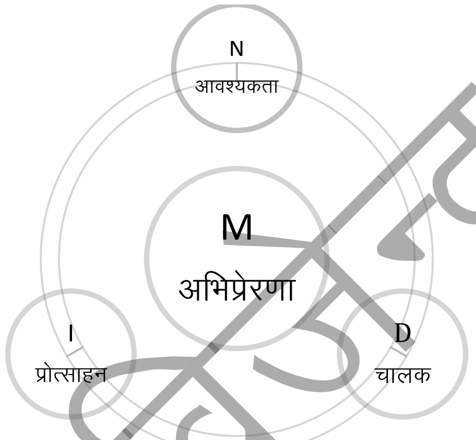

	आवश्यकता	चालक	प्रोत्साहन
1.	प्राणी के शरीर में पानी की कमी	प्यास	पानी
2.	भोजन की कमी	भूख	भोजन
3.	नींद की कमी	नींद	सोना

- **अभिप्रेरणा के सिद्धांत** :–

  1. मूल प्रवृति का सिद्धांत –

  प्रतिपाद – विलियम मैडगल

- **14 मूल प्रवृत्तिया बतायी** :– प्रत्येक मूल प्रवृति के साथ एक संवेग होता हैं।

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

संवेग	मूल प्रवृत्ति
1. भय	पलायन
2. क्रोध	युयुत्सा (युद्ध करने की इच्छा)
3. घृणा	निवृत्ति
4. वात्सल्य	सन्तान कामना
5. करूणा	शरणागति
6. आश्चर्य	जिज्ञासा
7. कामुक्ता	काम प्रवृत्ति
8. आत्महीनता	देन्य (दुःखी)
9. आत्म गौरव	आत्मभिमान
10. एकाकीपन	सामुहिकता
11. भूख	भोजन करने की इच्छा
12. स्वामित्व	संग्रहण
13. प्रतिमान	रचना
14. आमोद	हँसी मजाक

2.उद्दीपक अनुक्रिया :–
प्रतिपादक – थाईडाइक का

3.अनुक्रिया उद्दीपक :–
प्रतिपादक – B.F. स्किनर

4.प्रोत्साहन सिद्धांत :–
प्रतिपादक – बोल्स एवं काफमैन

5.आनुवाशिंकी पेटन का सिद्धांत :–
प्रतिपादक – लोरेन्ज

6.चालक/अर्न्तनोद/प्रणोद का सिद्धांत :–
प्रतिपादक – C.H. हल

7.मनोविश्लेष्णात्मक सिद्धांत :–
प्रतिपादक – सिगमंड फ्रायड

विजेन्द्र राठौड़

8.आवश्यकता पदानुक्रम का सिद्धांत :–

प्रतिपादक – अब्राहम मैस्ला

उपनाम – माँग सिद्धांत

➢ **अब्राहम मैस्लो ने मानव की आवश्यकताओं के आधार पर यह सिद्धांत दिया**

बौद्धिक आवश्यकता ←	IAS आत्म सिद्धि	उच्च स्तरीय
सामाजिक आवश्यकता	I सम्मान की आवश्यकता	
	II स्नेह व सम्बंधता की आवश्यकता	
व्यक्तिगत आवश्यकता	III सुरक्षा की आवश्यकता	निम्न स्तरीय
	LDC दैहिक सुरक्षा	

मैस्लो का पदानुक्रम सिद्धांत

9.उपलब्धि अभिप्रेरणा का सिद्धांत :–

प्रतिपादन – डेविस. सी मेक्लिएण्ड व उनके शिष्य एट् किसन

इस सिद्धांत के अनुसार किसी की उपलब्धि अभिप्रेरणा बन जाए या लम्बी अवधि तक बनी हुई उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

➢ **अधिगम की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की भूमिका :–**

1. लक्ष्य प्राप्ति मे सहायक
2. ध्यान केन्द्रित करने मे सहायक
3. मानसिक विकास में सहायक
4. व्यवहार नियन्त्रित करने में सहायक
5. अधिगम् हेतु दिशा निर्देश
6. सशक्त अधिगम् दिशाओं का निर्माण

➢ **अधिगम सम्बंधित असमानता :–**

1. **डिसग्रेफिया** :– (Dysgraphia)
   लेखन सम्बन्धी व्यक्ति क्रम
2. **डिसलेक्सिया** :– (Dyslexia)
   पठन/वाचन संबंधी व्यक्तिक्रम
3. **डिसकेलकुतिया** :– (Dyscallullia)
   गणित सम्बन्धी व्यक्तिक्रम
4. **डिसप्रेक्सिया** :– (Dysprexia)
   लेखन, वाचन व गणित में व्यक्तिक्रम

विजेन्द्र राठौड़

इकाई – 7

व्यक्तिगत विभिन्नता

अर्थ एवं स्त्रोत, विशेष आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा प्रतिभाशाली, धीमी गति से सीखने वाले, बाल अपचारी

- **व्यक्तिगत विभिन्नता का अभिप्राय :–** एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से जैविक, सामाजिक सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप में भिन्न नजर आने से है।

प्रकृति में प्रत्येक प्राणी को इस प्रकार से बनाया है कि वह दूसरे व्यक्ति से भिन्नता रखता है। यही व्यक्तिगत भिन्नता है।

व्यक्तिगत विभिन्नता का प्रत्यय मनोविज्ञान के क्षेत्र में 19वीं शब्ताब्दी में आया । इसे लाने का श्रेय इग्लैण्ड के निवासी फ्रांसीस गाल्टन टरमन, थार्नडाइक, स्किनर आदि को दिया जाता है।

वर्ततान बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की कल्पना व्यक्तिगत विभिन्न के बिना अधूरी है।

परिभाषाएँ :–

स्किनर के अनुसार :– ''सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई सा भी ऐसा पहलू जिसका माप किया जा सके उसे व्यक्तिगत विभिन्नता में शामिल किया जाता है।''

जम्स ड्रेवर के अनुसार :– ''कोई भी दो व्यक्तियों का एक समान ना होना ही व्यक्तिगत विभिन्नता है।''

व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार

औसत से	औसत से	औसत	औसत से	औसत से
बहुत कम	कम		बहुत अधिक	अधिक

वर्तमान समय में व्यक्तिगत विभिन्नता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है।

व्यक्ति विशेष के गुण या लक्षण विशेष के प्राप्त प्राप्तांक का उसके बडे समूह पर प्राप्त प्राप्तांक से मध्य मान से विचलन ही व्यक्तिगत विभिन्नता है।

- **व्यक्तिगत विभिन्नता के स्त्रोत, कारक, कारण**

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. जाति–प्रजाति, देश
4. आयु एवं परिपक्वता
5. बुद्धि
6. अधिक स्थिति एंव शिक्षा

विजेन्द्र राठौड़

7. लिंगभेद

विशेष आवश्यकता के बालक :–

1. **प्रतिभाभाली बालक** :– ऐसे बालक जो सभी कार्यो को सामान्य बालकों की तुलना में श्रेष्ठ तरीके से करते है वे प्रतिभाशाली बालक कहलाते है। इनकी बुद्धिलब्धि 140 से अधिक होती है।

प्रतिभाशाली बालक जन्मजात होते है। और उपयुक्त वातावरण मिलता है तो इनके गुणों का और अधिक विकास होता है।

प्रतिभाशाली बालको की विशेषताएँ :–

1. शब्द कोषो की विशालता
2. अध्ययन कार्यों में अद्वितीय सफलता
3. सामान्य ज्ञान में श्रेष्ठ
4. आश्चर्यजनक अन्तदृष्टि का प्रभाव
5. बुद्धिलब्धि 140 से अधिक

पतिभाशाली बालक की शिक्षा व्यवस्था :–

1. सामान्य रूप से कक्षोन्नति
2. विस्तृत एंव विशेष पाठ्यक्रम
3. शिक्षक द्वारा व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना ।
4. संस्कृति की शिक्षा
5. सामान्य बालकों के साथ शिक्षा
6. विशेष अध्ययन की व्यवस्था
7. पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था
8. नेतृत्व का प्रशिक्षण

2. धीमी गति से सीखने वाले बालक /या पिछडे बालक :–

इनकी बुद्धिलब्धि 80 – 89 होती है। ''पिछड़ा बालक वह है जो अपनी कक्षा का औसत कार्य नहीं कर पाता और कक्षा के सामान्य छात्रों से पीछे रहता है। पिछड़ा बालक कहलाता हैं ।''

एक प्रतिभाशाली बालक भी पिछड़ा बालक हो सकता है। यदि वह अपनी आयु के समकक्ष उपलब्धियाँ प्राप्त नही कर पाता है।

जब उसे उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता है।

पहचान या विशेषताएँ :–

1. धीमी गति से सीखते है।
2. इनकी बुद्धिलब्धि 80 – 89 होती है।
3. जन्मजात योग्यताओं की तुलना में कम उपलब्धि

विजेन्द्र राठौड़

4. जीवन के प्रति निराशा का भाव
5. सामान्य पाठ्यक्रम से सीखने में असमर्थ
6. सामान्य शिक्षण विधियों से सीखने में असमर्थ

धीमी गति से सीखने वाले बालको की शिक्षा व्यवस्था :–

1. विशेष विद्यालयों की व्यवस्था
2. विशेष कक्षाओं का आयोजन
3. सरल एवं सक्षिप्त पाठ्यक्रम
4. हस्त कौशल की शिक्षा
5. विशेष शिक्षकों की व्यवस्था
6. विशेष शिक्षण विधियों का प्रयोग

3. **बाल अपचारी बालक (अपराधी)** :– बालअपचारी बालक ऐसा होता है जो अपनी आवश्यकता की पूर्ति समाज द्वारा अस्वीकृत तरीके से करता हैं या सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बने नियमों व कानूनों का उल्लंघन करता है। वह बाल अपचारी बालक कहलाता है।
   इनकी आयु – 7 से अधिक 18 से कम हाती है।

   बाल अपराध – मनोविज्ञान का जनक – सीजर लोम्ब्रेसों है।

   बालअपचारी बालक की पहचान / विशेषताएँ :–

   1. शारीरिक रूप से हस्ठ–पुस्ठ।
   2. छोटे बच्चों को परेशान करना।
   3. विद्यालय की सम्पति को नुकसान पहुँचाने वाला।
   4. सत्ता को चुनौति देने वाला
   5. अध्ययन कार्य में व्यवधान उत्पन्न करने वाला ।
   6. चोरी करने वाला
   7. झगड़ा करने वाला
   8. अपशब्द कहने वाला
   9. यौन अपराध करने वाला आदि ।

बलअपचारी बालक की शिक्षा व्यवस्था :–

1. उचित वातावरण
2. उचित व्यवहार ।
3. निर्देशन व परामर्श उचित होना चाहिए।
4. युवा गोष्ठियों की स्थापना ।
5. प्रर्याप्त स्वतन्त्रता।
6. पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था।
7. उपचारात्मक एंव व्यवसायिक कक्षा में शिक्षा व्यवस्था

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

इकाई 8

विकास एंव शिक्षा में निहित्तार्थ :–

1. अभिरूचि
2. अभिवृत्ति
3. आदत
4. आत्मा सम्प्रत्यय
5. सामाजिक कौशल
6. रूचि

(1) अभिरूचि /अभियोग्यता / अभिक्षमता ।

अभिरूचि एक ऐसा मनोवैज्ञानिक तथ्य है जो व्यक्ति की वर्तमान परिस्थितियों व विशेषताओं के आधार पर यह भविष्यवाणी करता हैं कि व्यक्ति परीक्षण के बाद किस विषय या क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेगा।

अभिरूचि एक व्यक्ति के क्षेत्र विशेष में सफल होने की सम्भावनाओं का आकलन है।

नोट :– अभिरूचि जन्मजात एंव अर्जित दोनों प्रकार की होती है।

- **अभिरूचि के प्रकार** :–
  1. **यांत्रिक अभिरूचि** – जैसे – बढ़ाई गिरि, मोटरवाहन ठीक करना, इंजीनियर ।
  2. **संवेगात्मक अभिरूचि** – जैसे – घृणा शक्ति, स्वाद शक्ति ईर्ष्या शक्ति ।
  3. **कलात्मक अभिरूचि** – जैसे – संगीत नृत्य, फोटोग्राफी, कविता रचना
  4. **शैक्षिक अभिरूचि** – जैसे – वैज्ञानिक, अध्यापक, इंजीनियर
  5. **व्यवसायिक अभिरूचि** – जैसे – लिपिक कार्य वकालात कार्य शिक्षण अभिरूचि

- **आभिरूचि का मापन** :–
  1. सामान्य अभिरूचि परीक्षण – निर्माण – अमेरिका 1962
  2. विभेदक अभिरूचि परीक्षण – निर्माण – 1947 सिशोर बीने वैसमेन (अमेरिका)
  3. विशेष अभिरूचि परीक्षण – निर्माण – अमेरिका

- **अभिरूचि का शैक्षिक महत्व** :– बालको की अभिरूचि को पता करके उन्हे उचित एवं शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन व परामर्श दिया जा सकता है।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

(2) अभिवृत्ति या मनोवृत्ति :– अभिवृत्ति का अभिप्राय दृष्टिकोण या नजरिये से है।

अभिवृत्ति एक व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करने वाला प्रमुख कारक है।

अभिवृत्ति अर्जित व परिवर्तनशील होती है।

➢ **अभिवृत्ति के प्रकार** :– अभिवृत्ति तीन प्रकार के होते है।

1. सामाजिक अभिवृत्ति
2. व्यक्ति विशेष के प्रति अभिवृत्ति
3. समूह के प्रति अभिवृत्ति

अभिवृत्ति मापन :–

1. प्रत्यक्ष प्रश्नावली विधि
2. प्रत्यक्ष अवलोकन विधि
3. परिमापन विधियाँ

   1. **युग्म तुलतात्मक विधि** :–
      प्रवर्तक – थर्स्टन ने 1927 में यह विधि दी सबसे प्राचीन विधि

   2. **समदृष्टि अन्तर विधि** :–
      प्रवर्तक – थर्स्टन व चेव ने 1929 में दी

   3. **योग निर्धारण विधि** :–
      प्रवर्तक – लिकर्ट ने यह 1932 में दी

नोट :– दुसरी व तीसरी विधि सर्वाधिक प्रचलित है।

(1) विद्यार्थियों की अवांछित मनोवृत्तियों को वांछित अभिवृत्तियों में रूपान्तरित करवाया जा सकता है।

विजेन्द्र राठौड़

Notes By :- विजेन्द्र राठौड़

(3.) आदत :– Habit

लैटिन भाषा के Habitus /Habere से बना है जिसका अर्थ होता है प्राप्त करना

इस प्रकार आदत एक सिखा गया या आर्जित व्यवहार है जो बाद में अपने आप होने लगता है।

महत्वपूर्ण परिभाषाएँ :–

- **गेरेट के अनुसार :–** ''आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है। जो कितनी बार दोहराया जाता हैं यत्रंवत हो जाता है। ''
- **लैडेल के अनुसार :–** ''आदत कार्य का वह रूप हैं। जो आरम्भ में स्वेच्छा से और जानबूझकर किया जाता है। जो बार बार किए जाने के बाद स्वतः होने लगता है। ''
- **विलियम जम्स के अनुसार :–** ''प्राणी के पूर्वव्रत व्यवहारों की पुनरावृत्ति ही आदत है। ''

आदत के प्रकार :– वेलेनटाइन ने आदत के 7 प्रकार बताऍ

1. यांत्रिक आदते
2. शारीरिक अभिलाषा सम्बन्धी आदत
3. नाड़ी सम्बन्धी
4. भाषा सम्बन्धी आदतें
5. विचार सम्बन्धी आदतें
6. भावना सम्बन्धी आदतें
7. नैतिकता सम्बन्धी आदतें

- **आदत का शैक्षिक महत्व :–**

(1) अच्छी आदतें व्यक्ति को सर्वाधिक विकास में योगदान प्रादन करती है।
(2) आदते चरित्र का निर्माण करती है। इसीलिए कहा गया है कि चरित्र आदतों का पुंज है।
(3) आदते व्यक्ति का आवरण है । क्लेपर या फ्लेफट ने
(4) जब कोई सीखा गया कार्य बन जाता है। तो उस कार्य को करने में थकान नही होती है। और कार्य कुशलता बढती हैं।

विजेन्द्र राठौड़

4. **आत्म समप्रत्यय** :– आत्म सम्प्रत्यय का अभिप्राय एक व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं के बारे में किसी राय मत था धारण को निर्मित करने की प्रकिया से है।

आत्म अनुभूति, आत्म चिंतन या आत्मसम्प्रत्यय के अन्तर्गत व्यक्ति अपने स्वयं के बारे में जानता है। वह अपनी शक्तियों , दुर्बलताओं सफलताओं व असफलताओं के बारे में परिचित होता है।

आत्म सम्प्रत्यय का विचार रेन डेसकोर्टेश द्वारा किया गया ।

इन्होने सज्ञांन (बुद्धि) अर्थात स्वयं पहचान के सन्दर्भ में आत्म समप्रत्यय पर चर्चा की

लेकिन इस पर विस्तृत चर्चा विलियम जेम्स ने 1896 में अपनी पुस्तक Principal Psychology में आत्म समप्रत्यय के (4) घटक बताएँ है

1. भौतिक आत्म सम्प्रत्यय
2. आध्यात्मिक आत्म सम्प्रत्यय
3. सामाजिक आत्म सम्प्रत्यय
4. शुद्ध अहम् आत्म सम्प्रत्यय

आत्म सम्प्रत्यय के 2 पक्ष होते है। प्रकार

1. **वास्तविक आत्म सम्प्रत्यय** –
   जैसे – मै कौन हूँ ?
   मै क्या हूँ ?
2. **आदर्श आत्म सम्प्रत्यय** – मै क्या बनना चाहता हूँ ?

आत्मा सम्प्रत्यय के पक्ष :–

1. **शारीरिक पक्ष** – इसके अन्तर्गत व्यक्ति अपनी शारीरिक शक्तियों से परिचित होते हैं
2. **मनोवैज्ञानिक पक्ष** – इसके अन्तर्गत अपनी व्यवहारिक सफलता व असफलता से परिचित होते है।

आत्म सम्प्रत्यय का शैक्षिक महत्व :–

1. अध्यापक छात्रों में आत्म सम्प्रत्यय विकसित करके उन्हें किसी कार्य को करने की प्रेरणा दे सकता है।

5. **सामाजिक कौशल** :– सामाजिक कौशल का अभिप्राय उन न्यूनतम योग्यताओं और कुशलताओं से है जिन्हें एक श्रेष्ठ सामाजिक जीवन जीने के लिए आवश्यक माना गया है।

सामाजिक कौशल से परिपूर्ण व्यक्ति वर्तमान लोकतान्त्रिक समाज में एक आदर्श नागरिक की भूमिका निर्वाह करता है।

विजेन्द्र राठौड़

5. सामाजिक कौशल के प्रकार :–

1. सामाजिक भावना का विकास / कौशल
2. सामाजिक जागरूकता
3. सम्प्रेषण कौशल
4. अन्तर व्यक्ति संम्बधों का कौशल
5. नेतृत्व का कौशल
6. समस्या समाधान कौशल

शैक्षिक महत्व :–
विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल का विकास करके उन्हे श्रेष्ठ सामाजिक जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

6. रूचि :–

रूचि का अभिप्राय :– एक व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति वस्तु स्थान या प्रक्रिया के प्रति ध्यान देना आकर्षित होना या पसन्द करने की प्रक्रिया से है।

नोट :– रूचि जन्मजात व अर्जित दोनों प्रकार की होती हैं ।

सुपर ने रूचि के 4 प्रकार बताए

1. अभिव्यक्त रूचि
2. प्रदर्शित रूचि
3. आंकलित रूचि
4. सुचित रूचि

रूचि मापन की विधियाँ :–

1. प्रश्नावली विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. अवलोकन विधि
4. उपलब्धि परीक्षा
5. रूचि सूचि

विश्व में सर्वप्रथम रूचि परीक्षण का निर्माण सन 1919 में कनिंगे इन्सटीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी अमेरिका में हुआ ।

भारत में प्रथम रूचि परीक्षण 1956 में इलाबाद मनोवैज्ञानिक ब्यूरों द्वारा बनाया गया । जो कुडर रूचि सूची का रूपान्तर है।

विजेन्द्र राठौड़